एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा

हे परमेश्वर तू सच्चा है और तेरा नाम सच्चा है ।

जनवरी-2012

मुक्ति का रास्ता

एक प्रति का मूल्य 15 रूपये तथा वार्षिक 180 रूपये ।

निर्जल व्रतों का कल्प 10 जनवरी से 20 फरवरी तक

हस्तस्य भूषणं दानम्, सत्यं कण्ठस्य भूषणम्।
श्रोतस्य भूषणं शास्त्रं, भूषणे किं प्रयोजनम्॥

प्राचीन देवों तथा ऋषिगणों की बाणी को सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वाले इस प्रकार कहते हैं–हाथों का आभूषण दान है,सच बोलना गले का आभूषण है, कानो का आभूषण सत शास्त्रों के बचनो को सुनना है, ये ही सतपुरूषों के सनातन आभूषण कहे गये हैं, इनके सिवा अन्य आभूषों से क्या लेना ? वे तो केवल हमारे शरीर को सुन्दर बनाते हैं, पर सतकरम हमारी आत्मा को सुन्दर बनाते हैं, अतः आत्मा की सुन्दरता ही सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है और सब कुछ है।

जो ईमान के रस्ते पे वो कभी गिर सकता नहीं। सच के साये में जो खड़ा वो कभी मिट सकता नहीं॥
झूठ की जो खेती बोवे रो रोके वो काटे। परमात्मा तो अच्छे बुरो को अलग अलग छाँटे॥
अपना नाम लेने वालों को प्रभ सीने से लगावे। लोभी लालची को यमराज नरक में ले जावे॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते कर सच्चाई की खेती। सच की दौलत सितारे को सूरज बना देती॥

सम्पादक–सोहंग देवता

फोन–9412493683,
9368596747

RNI.No.UPHIN/2000/772, Postal Reg. No.UP/BjR-18/2009
सतपुरुष बाबा फुलसन्दे वालों के लिये सोहंग देवता ने आकाश प्रैस 1/2080, ओखला दिल्ली 9810005167 से मुद्रित कराकर गुरु गद्दी दरबार फुलसन्दा, नहटौर–कोतवाली रोड जिला–बिजनौर (उ.प्र.) से प्रकाशित किया । सम्पादक–सोहंग देवता,कम्प्यूटर डिजाइन–फुलसन्दा, फोटो ग्राफी–नीरज वितरण–वरुण देवता, धानपति, गरूड़, चरणारविन्दम्

सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वालों का हस्तलिखित संदेश –

एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा

- मस्तक के मेहराब में यानी ताख में ईश्वर का चिराग जलता है उस जगह बैठकर तू उस मालिके दो जहान का नाम ले और कान में आते अनहद को सुन एक दिन तुम्हें उस सच्चे महबूब यानी परमात्मा का दीदार होगा,
- वक्त गुरू की सेवा आत्मा की खुराक है, वो खुराक रूह को अगर वक्त-२ पर ना मिलेगी तो वो कमजोर और सियाह पड़ जायेगी, गुरू की बातों को मजाक ना समझ उसे ईश्वर का अलहाम यानी वाणी समझ, गुरू के प्रति प्रेम ही आत्मा का भोजन है।
- वक्त गुरू की सेवा से ही हम ईश्वर को पा सकते हैं, जो गुप्त हो चुके हैं वे हमारे सहायक नहीं हो सकते।
- वक्त गुरू सर्वज्ञानी और सर्वसमर्थ हैं।
- प्रेम द्वारा नक्षत्रों तक की ऊँचाई नापी जा सकती है, प्रेम ही ईश्वरीय रहस्यों को प्रकट करने तक की सामर्थ रखता है, प्रेम का जिक्र करते समय बुद्धि निद्रामग्न हो जाती है।
- इस नफ्स यानी मन यानी वासनाओं का दास ना बन ये वासनाएं तुझे दुनियाँ में जलील और बेआबरू कर देंगी खामोश रह और सब कुछ और अपना आपा उस रब्बे- दो जहान को सौंप दे और बेफ़िक्र हो जा।
- उस मुँह से प्रार्थना कर जिस मुँह ने बकवास ना की हो झूठ ना बोला हो, दूसरों की चुगली और बुराई ना की हो नहीं तो गन्दे मुँह से की हुई प्रार्थना और दुवा को वो दो आलम का सच्चा सुल्तान वो ईश्वर कब सुनता है और कब स्वीकार करता है।

सतपुरुष बाबा फुलसन्दे वाले

1-1-2012

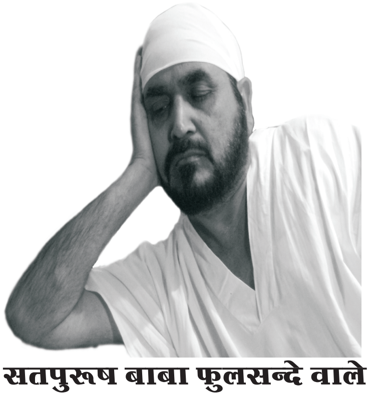

सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वाले

एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा

हे परमेश्वर ! तू सच्चा है और तेरा नाम सच्चा है

नीस्त हस्ती बजुज यजदान –नहीं है किसी की हस्ती सिवा परमेश्वर के ।

मृत्यु के देवता यम सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वालों को जब परलोक में ले गये तो वहाँ देवताओं ने उनके मार्ग में पुष्प बिछाये। मृत्युदेव उनको स्वर्ग–नरक, देवताओं, फरिश्तों व पैगम्बरों के स्थानो में ले गये और कहा देखो ये सब उस एक परमेश्वर की आराधना करते हैं। उसी की आराधना तुम पृथ्वी पर जारी कराओ तुम्हारी प्रार्थना पर हम रोज नरक में यातना पाते एक आदमी को बक्श दिया करेंगे। फिर वे उनको परमेश्वर के आलोकित धाम में ले गये जहाँ का हाल सिवा उस परमेश्वर के कोई दूसरा नहीं जानता वहाँ से वापस आते हुए सतपुरूष ने सारे संसार के वास्ते समस्त आत्माओं के वास्ते परमेश्वर से इस तरह से प्रार्थना करी –

हे परमेश्वर ! तू जमीन-आसमान और रूहों का स्वामी है, कौन है जो तेरी बराबरी कर सके, कोई नहीं है, तेरे प्रकाश में देवता और फरिश्ते तेरी आराधना में मस्त हुए झूमते हैं, उस प्रकाश की एक बूँद तू हमें बक्श, हमें अपने करीब कर, हमारा नाम अपनी पवित्र आत्माओं में लिख, हमें अन्धेरे से निकाल कर उजाले और रोशनी में ला, जो बीमार हैं उन पर रहम कर, जो दुःखी लाचार हैं उन पर रहम कर, अपने भले-बुरों पर तू रहम कर, तेरा रहम हम पर होवे, तेरा प्रकाश हमारे साथ हो, हे परमेश्वर ! तू हमें अपनी ज्योति में विश्राम दे, जो तेरे रास्ते पर आये हैं उनके वास्ते अपना रास्ता आसान कर, दुःख-भोग का प्याला हमारे सामने से हटा दे, हे परमेश्वर ! दुःखों के वन में भटकती हुई आत्माओं को शान्ति दे.

एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा बाकी बचे ना कोय।
तू रहे तेरा नाम रहे नहीं और रहेगा कोय ।।
एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा सबमें तेरा नूर समाया।
मेहर कर मैं तेरा बन्दा तेरी चौखट पे आया ।।
मेरा सतगुरु साँचा शाह है करम की रेख मिटावे।
भव अन्धयार से पार करके ज्योति ज्योत समावे ।।
जीवन और मौत के घाट हैं दो जहाँ तेरी जोत बले।
जहाँ कोई ना संग चले वहाँ तू ही संग-संग चले ।।
एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा

सुभा उठते ही जो परमेश्वर की इस प्रार्थना को पढ़ते हैं उनका पूरा दिन स्वर्ग के फूलों से महकता रहता है ।और जो रात में सोने से पहले इसे पढ़ते हैं रात भर उनके पास देवआत्माऐं उनके लिये प्रार्थना करती हैं ।

बेशक परमेश्वर ने इन्सान को अपनी सेवकाई और आराधना करने के वास्ते बनाया है।

Ek To Sachcha Tera Naam Sachcha

you alone are true your name is true...

Lord Yam the Lord of death took SatPurush Baba Phulsande Vale with him to the other world . there he showed him the land of Gods Heaven and hell . Then he took him to the abode of the almighty and said ,behold ! all the Gods and Angles pray to the Almighty alone . Bring the people of the world to the path of the Almighty , bring them to the path of God then , Satpurush prayed for the whole world thus _

O God ! you are the lord of earth, sky and spirits. Who can equal you ? None. Deities and angels merry in thy light of your prayer. Give us a drop of the light. Give us your proximity. Enlist our names among your holy souls. Take us into light from dark. Bless them who are ill, bless them who are sad and helpless, bless your holy souls and evil ones too. Your grace be upon us, your light be with us. O God ! give us rest in your divine light. Make your way easy for them who come towards you. Take the cup of sadness away from us. O God ! give rest to the souls astraying in the woods of the world. You alone are true your name is true. No one but you will remain. You and your name exist forever. No one except you will be. You alone are true your name is true, your divine light shines in all. Bless me your worshipper, who has come at your door. My satguru my spiritual master, is my true lord, who undoes all my worldly deeds. He carries me beyond the darkness of the world and my soul rests in his. your light shines at the moments of life and death both. Only you accompany where no one else comes along. you alone are true your name is true...!

Eshwar Aaradhna Esthl, GURU GADDI DARBAR
PHULSANDA, DIS. **BIJNOR, U.P. INDIA**, MO. 9412493683" 9917547188
9368596747

अ इन्सान ! अगर तू परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करे तो संसार तेरी हर आज्ञा मानेगा।

जिस रब को दुनियां ढूंडे वो तो तेरे दिल में है। वो तेरा चाहने वाला रूहों की महफिल में है।
गुरू के दर से उस प्रभ का अतापता मिलता है। अपने ही भीतर एक दिन ये फूल खिलता है॥
मानबड़ाई छोड़कर गुरू के सामने जा। दुनियां पे ना कर नजर प्रभ के गीत गा॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहें धन धन उनके भाग। जिनकी रूह रब के नूर में रात दिन रही जाग॥

मेरी आत्मा है बाँसरी

सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वालो ने अपने चरणों में सामने बैठे अपने देवतुल्य अनुयाइयों से इस प्रकार के ईश्वरीय बचन कहने आरम्भ किये– हे परमेश्वर के मार्ग में आये हुओ ! परमात्मा ने जो आत्मा की बाँसरी को बनाया और अपना होठ उस पर रख कर दिव्य संगीत निकाला उस संगीत ने सबको वशीभूत कर लिया उसकी धुन से जमीन आसमान भर गये और ये बाँसरी उस सिरजनहार के हाथ से गिर कर इस जगत में आ गई और दुख से भर गई, जरा बाँसुरी को सुनो जो आग्रहपूर्ण स्वर में अपने घर बाँस का जंगल से बिछुड़ने का रोना रो रही है। ये बाँसरी आत्मा है जो अपने सच्चे प्रीतम से उस रब से बिछुड़ गई है ये कहती है कि जब से मुझे मेरे सोत से काटा है मेरा विलाप प्रत्येक पुरूष व स्त्री को रूलाता है मैं चाहती हूँ कि मेरा ह्रदय टुकड़े टुकड़े हो जाए ताकि हर टुकड़ा मेरे वियोग की कहानी कह सके और मेरे घर लौटने की उत्कण्ठा की अभिव्यक्ति कर सके क्योंकि जो भी अपने सोत से कटा, हर पल वहीं लौटने के अवसर की प्रतीक्षा करता है और मैंने तो अपना दुखड़ा हर महफिल में रोया है। उनके सामने जो परमात्मा की राह पर हैं और उनके सामने भी जो सांसारिक मोह में फँसे हैं। हर व्यक्ति अपने पूर्वग्रहानुसार मेरा हमदर्द तो बन गया परन्तु किसी ने भी मेरे दुख भरे विलाप के रहस्य को समझने का प्रयास नहीं किया। यद्यपि मेरा रहस्य मेरी चीत्कार से पृथक नहीं किन्तु उसे देखने के लिए आँखें और सुनने के लिए कान होने चाहिये। परमात्मा मेरे विलाप को सुनेगा और अपने किसी दोस्त को यानी सच्चे रहबर को सच्चे गुरू को भेजेगा जो मुझे वापस उसके भवन में लेजावेगा । आत्मा शरीर में निवास करती है और शरीर आत्मा का वस्त्र है परन्तु शरीर आत्मा को देख तो नहीं सकता, सिद्ध कर सकता है। बाँसुरी भी कहती है –जिस प्रकार आत्मा शरीर से पृथक नहीं उसी प्रकार मेरा रहस्य मेरे रूदन से दूर नहीं, बाँसुरी का संगीत प्रेम की अग्नि से उत्पन्न हुआ, न कि केवल फूँक से। जो इस आग से अनभिज्ञ है वह इसके संगीत से भी अनभिज्ञ रहा। प्रेम की जिस अग्नि ने बाँसुरी को प्रज्वलित किया उसी अग्नि ने धरती को सूरज की कशिश में बांध दिया है ये प्रेम अविनासी है ये गुरू की सेवा से मिलता है ।

रात दिन परमेश्वर का जो नाम जपता रहता। दुख संकट मुसीबत में वो रब की निगाहों में रहता।।
फूलों में और पतझड़ में जो महिमा प्रभ की गाता है। प्रभ उसमें बस जाते वो प्रभ में बस जाता है।।
गुरू ने जिसके माथे पे रखा अपना हाथ। आसमानी नूर में वो नहावे है दिन रात।।
फुलसन्दे वाले बाबा कहते दो दिन की ज़िन्दगानी है। आदमी की ज़िन्दगी दरया जैसा पानी है।।

गायक

बाँसुरी संगिनी है उसकी जो अपने प्रियतम से बिछुड़ा हो क्योंकि वही उसका प्रेम के गहन संगीत को समझ सकता है। इसका संगीत उन आवरणों को चीर देता है जो आत्मा को यथार्थ से दूर करते हैं। ये आवरण हैं संसारी मोह के। बाँसुरी विष भी है और अमृत भी, प्रेमी भी है और प्रियतम भी। यह द्योतक है प्रेम के उस विषम पथ की जिस पर संसारी वासनाओं का संहार हो जाता है, यह स्मरण कराती है फकीरों के परमात्मा से सच्चे इश्क का, बाँसुरी का एक सिरा तो बाँसुरी गायक के मुख में दबा व छिपा होता है तथा एक छेद बाहर की ओर होता है जिसमें से ध्वनि निकलती है। किन्तु यह ध्वनि तो बाँसुरी वादक की है जिसके बिना बाँसुरी गा नहीं सकती। ऐसे ही हर मनुष्य बाँसुरी के समान है जिसका नादक ईश्वर है, जो होता है उसी की इच्छा से होता है हम मुरली हैं वह हमारा अदृश्य मुरलीधर है। बाँसुरी के बाहरी द्वार से उसकी वेदना उत्सर्जित हो रही है जिससे पृथ्वी एवं आकाश काँप उठे हैं। परन्तु जो वास्तव में बुद्धिमान हैं जो देख सकते हैं वे जानते हैं कि जो ध्वनि बाँसुरी के बाहरी द्वार से आ रही है वह यथार्थ में बाँसुरी गायक की है और किसी की नहीं। बाँसुरी के समस्त स्वर व तानें ईश्वरीय उच्छवास की उत्पत्ति हैं आत्मा की हर कम्पन्न उसी के निर्देश से है। जिसे इस दिव्य रहस्य का बोध हुआ वह संसार से निर्बोध हो गया, यह भाषा वही समझ सकता है जिसने वह धुन सुनी है। कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जिन्हें बाँसुरी की इस प्रेम धुन का बोध है अन्यथा उस प्रेम की जो कटुता एवं नीरसता को भी मधुर बना देता है,उसका व्याख्या कैसे हो सकती है ? और जो अनुरागी हैं वे तो दिन प्रतिदिन प्रभु के विरह की अग्नि में जलते हैं। परन्तु इससे क्या ? दिनों को ढलने दो हमारा सर्वोत्कृष्ट ईश्वर अपनी विमलता में अद्वितीय है वह तो अमृत की अविरल धारा है। उस सरिता की मछलियाँ उसके पवित्र जल से कभी तृप्त नहीं होतीं। जो तृप्त हो जाए वह मछली कैसी ? उस अति पवित्र परमात्मा से जिसने जो माँगा उसे वही मिला उसके दरबारे आम से कोई भिक्षु निराश नहीं लौटा। संक्षेप में समझो कि अपूर्ण को परिपूर्ण का ज्ञान नहीं हो सकता। कौन कल्पना कर सकता है कि निर्मल पूर्ण प्रेमी की अन्तरात्मा में क्या घटित हो रहा है?

हर दम शुकर करो उस रब का सुख हो चाहे परेशानी। बह जावेगा अच्छा बुरा दरया का सारा पानी॥
सुख ना रहा दुख भी ना रहेगा मन में अपने सोच। आता जाता सफर दुनियां का कुछ ना रहेगा सोच॥
रात दिन सुमरन कर प्रभ का जिन्दगी बीतने वाली है। चाँद ढलने वाला है रात बीतने वाली है॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते गुरूचरणों में रख ध्यान। तेरे भीतर आप बैठा परमपुरख भगवान॥

असंतुष्ट

निःसन्देह मय की ज्वाला को मद्यमत्त ही जानता है किन्तु उस ज्वाला की तुलना इश्क की आग से नहीं की जा सकती नक्षत्रों का परिभ्रमण सर्वविदित है परन्तु प्रेमी का अपने प्रियतम के चारों ओर परिभ्रमण अवर्णनीय है। उन्माद मदिरा में नहीं, प्रेमी में है ! शरीर आत्मा से है, आत्मा शरीर से नहीं। इस सत्य का सामना करने का सामर्थ्य हर किसी में नहीं हर पक्षी का भोजन अंजीर नहीं हो सकता,यदि ईश्वर–प्रेमी अपने प्रेम की उड़ान की कहानी सुनाए तो कौन मानेगा कौन समझेगा ? इसलिए सुनो पुत्र ! यदि तुम वास्तव में ईश्वर की खोज में हो तो सांसारिक बंधनों को काटो कब तक तुम सोने व चाँदी की जंजीरों में जकड़े रहोगे वासनाओं का कोई अन्त नहीं , सत्ता एवं ऐश्वर्य की चाह शाश्वत है इन डोरियों से प्यार कैसा ? लोलुप सदा असंतुष्ट रहता है,उसकी दृष्टि सदैव शिकार पर केन्द्रित रहती है,इसी में उसका असन्तोष निहित है,सीपा को देखो ! स्वाँति की एक बूँद से संतुष्ट होकर मुँह बंद कर लेती है और देती है मोती ,तुम्हारी आत्मा पर चढ़े मल व मैल के आवरण का यदि कोई शक्ति नाश कर सकती है तो वह है प्रेम ! हमारे वस्त्र हमारी कुरूपता को ढकने का आवरण मात्र है। प्रेम हमें पवित्र करता है और तब हमें वस्त्रों की आवश्यकता नहीं रहती। जिसने तुझे बादशाह का ताज बख्शा उसी ने मुझे परेशानियों का सामान दिया। जिसको उसने कलंकित देखा उसको उसने आवरण दिये और जिसको उसने पवित्र पाया उसको उसने उसके असल रूप में रहने दिया जैसे वृक्षों को और फूलों को, प्रेम से बढ़कर शोधक कोई नहीं परमात्मा से मिलन का उत्साह सर्वोत्तम परिमार्जक है। ईश्वरीय प्रेम परिपूर्ण एवं सर्वरोगनाशक है, धन्य हैं ऐसे प्रेमी ! मद एवम् यश व कीर्ति की लालसा रोग हैं, जिनका निवारण ईश्वर का प्रेम है। इन विकारों के लिए प्रेम ऐसा निवारक है जैसे सोने चाँदी के लिये आग, तत्वों से निर्मित तथा तत्वों में ही विलीन हो जाने वाले इस शरीर को यदि प्रेम के पंख मिल जाएँ तो यह आकाश तक में उड़ सकता है। प्रेम में उन्मत्त होकर पर्वत तक नाच उठते हैं। यदि मेरा अपने प्रियतम से वैसा ही संग हो जाए जैसा बाँसुरी का बाँसुरी गायक से है तो मैं भी बाँसरी बन जाऊँ ।

बैठा रह उस रब की याद में देख उसका नूर। तेरे माथे में उगे हैं तारे चाँद और सूर॥
गुरू के कदमों में बैठके तज दे सब अभिमान। नफस के घोड़े से उतर तो मिले भगवान॥
दरस गुरू का आँखों में रख जीभ पे प्रभ का नाम। झूठे यार हैं दुनियां के मत रख इनसे काम॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते वो फिर दुख ना पावे। गुरू के चरणों में देखे जो जोती वो अमर हो जावे॥

काश ऐसा होता

काश मैं अपने प्रियतम परमेश्वर के रहस्यों को उसी प्रकार से समझ सकता और गा सकता, जिस प्रकार बाँसुरी अपने गायक के स्वर की अभिव्यति करती है। जो अपने प्रियतम से पृथक हुआ उसने अपना सच्चा आश्रय गवां दिया, भले ही उसे सहस्त्रों संसारी व्यक्तियों का समर्थन क्यों न प्राप्त हो। बुलबुल का अपने प्रियतम के संग में चहकना और पतझड़ में मौन हो जाना इसकी सत्यता को प्रमाणित करता है। गुलाब के मुरझाने से उद्यान उजड़ गया अब बुलबुल को गुलाब की महक कहाँ मिलेगी, गुलाबजल की महक गुलाब के समान तो नहीं हो सकती। प्रियतम ईश्वर सर्व विद्यवान है, प्रेमी मनुष्य तो मात्र एक पर्दा है। प्रियतम ही सदैव जाग्रत है। प्रेमी प्रियतम में विलीन होकर एक हो गया। प्रियतम की प्रेमी के प्रति उदासीनता प्रेमी को एक पंख कटे पक्षी के समान दया का पात्र बना देती है। ईश्वर के प्रति हमारा प्रेम एक ऐसी डोरी है जो हमे उसके महल तक पहुँचा देती है। यह प्रेम बहेलिये का वह जाल है जो चिड़िया को बहेलिए तक पहुँचा देता है। प्रेम का वह प्रकाश सर्वविद्यमान है—पूरब,पश्चिम, उत्तर व दक्षिण, वह मेरे मस्तक पर है तथा मेरे कण्ठ में है एक चक्र के समान। यह उस प्रेम की आवश्यकता है कि प्रत्येक मनुष्य उसमें सराबोर रहे, सब उसकी गरिमा की छत्रछाया में फलें फूलें। परन्तु दुर्भाग्यवश, मानव हृदय के दर्पण पर काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार की धूल है जो प्रेम के इस प्रकाश को प्रति—बिम्बित नहीं होने देती। और तुझे इसका ज्ञान है और तू यह भी जानता है कि क्यों उस प्रेम की ज्योति तेरे हृदय रुपी दर्पण में प्रति—बिम्बित नहीं होती। जो दर्पण इन कुण्ठाओं से रहित है वह सदैव सर्वोत्कृष्ट सूर्य के उस तेज से जगमगाता है जो समस्त सौरमण्ड़लों को प्रकाश युक्त करता है। तो सुनो भाई! जाओ और पहले अपने हृदय के दर्पण पर जमी काम, कोध इत्यादि की इस जंग को छुड़ाओ तब इस दर्पण में उस ज्योति पुंज के दर्शन होगें। ध्यान पूर्वक मेरा अनुरोध सुनो ताकि तुम माटी एवं जल से निर्मित इस कैद खाने से मुक्ति पा सको। यदि तुम्हारे अन्दर लेशमात्र भी बुद्धि है तो तुम अपनी आत्मा की चेष्टा समझने का प्रयास करोगे और तभी तुम ईश्वर की राह पर चलने के योग्य बन सकोगे। पहले इस राह से परिचित हो जाओ इसे अच्छी तरह जानलो ।

पूरे गुरू के ज्ञान से मन होवे उजियार। छोड़ चतराई सियाणपा सब धूल होवे संसार॥
जो खुद को सियाणे बने खावें जम की लात। मारे मारे फिरें जगत में कोई ना पकड़े हाथ॥
जो जग में सियाणे बने उनके मुख पे धूल। आंखों में कांटे उगें रब को जावें भूल॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते चाँद सच्चे के दामन में। झाड़ उगेंगे एक दिन मक्कारो के आंगन में॥

आत्मा की पीड़ा

यदि हम अपनी आत्मा की पीड़ा को जान जायें और उसके उपचार हेतु प्रयासरत हो जायें तो हम दोंनो दुनियां में अविनासी सुख की प्राप्ति कर सकते हैं हमें पहचानना ये है कि हम कौन हैं,कहाँ से आये है,कहाँ जाना है,कैसे जाना है,किस राह से जाना है तथा कौन हमारा मार्गदर्शक है। हे प्रभु तेरी इच्छा, के उचारण मात्र से क्या होता है ! महत्व तो इस विश्वास का है कि जो होता है प्रभु की इच्छा से होता है। इस निष्ठा के अभाव में ईश्वर इच्छा कहना मानव हृदय में व्याप्त अहंकार व अन्धकार का ही द्योतक है। इसके विपरीत कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने प्रभु इच्छा की औपचारिकता तो नहीं निभाई किन्तु वे निष्ठावान थे और अपने अन्तरम में उनको यह विश्वास था कि मनुष्य के बस में केवल कर्म करना है,फल नहीं, और इसी विश्वास ने उन्हें सफलता दिलायी और वे परमेश्वर के प्रेम में सिद्धता को प्राप्त हुए,यह कहावत सत्य ही तो है कि जब मृत्यु समीप हो तो चिकित्सक की दक्षता भी लुप्त हो जाती है,उसकी प्रत्येक दवा का परिणाम विपरीत ही होता है,विपरीत काल में मधु व सिरका का मिश्रण भी खाँसी का प्रतिकार न करके, पित्त उछाल कर उसे और भी भड़का देता है और बादाम का तेल भी त्वचा को कोमलता प्रदान न करके खुश्क कर देता है। हमारी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति प्रभु की अनुकम्पा से ही होती है और फिर भी हकीमों के सहारे रहकर आदमी मूर्ख बनता रहता है और उस सर्वदर्शी ईश्वर को अपना हाल सुनाकर दूसरी बड़ी भूल करता है वह सोचता है ईश्वर तेरे बारे में कुछ जानता नहीं,समस्त विचार क्षणभंगुर हैं तथा यह संसार भी विचार के समान ही क्षणिक व अस्तिवत्तहीन है। इस संसार में युद्ध एवं शान्ति का प्रेरक विचार है, उसी प्रकार मान अपमान भी विचारों पर ही निर्भर हैं। परन्तु ये विचार भक्तजनों के भिन्न हैं, क्योंकि उनके विचारों में परमात्मा के सौन्दर्य की झलक मिलती है, निःसन्देह, मुनि का परिचय उसके मुखमण्डल की दिव्य कान्ति से ही हो जाता है। ऋषि का चेहरा ऐसा दर्पण है जो प्रभु का तेज प्रति–बिम्बित करता है जिसे नेत्रवान परख सकते हैं।

परमेश्वर की करो आराधना सतगुरू कहते। मत बनो मन का गुलाम सतगुरू कहते ।।
सत की नौका पे चढ़ो सतगुरू कहते। हो जाओगे भव जल पार सतगुरू कहते ।।
इस सागर में नौका मैं हूं सतगुरू कहते। हाथ पकड़लो मेरा सतगुरू कहते ।।
फुलसन्दे वाले बाबा कहते गुरू की बात जो माने। पारब्रह्म परमेश्वर को वो अपने भीतर जाने ।।

पवित्र हृदय

यदि तुम्हारा हृदय पवित्र है, तो तुम भी ईश्वर के तेज का दर्शन संतो के मुखमण्डल पर कर सकते हो। हम ईश्वर से याचना करते हैं कि वह हमें वयोवृद्ध ज्ञानी व संतो का आदर करने की वृत्ति का दान दे। अशिष्ट न केवल अपना सर्वनास करता है बल्कि सम्पूर्ण विश्व–व्यवस्था को विध्वंस भी करता है। यदि तुम्हें बादल दिखाई नहीं देते एवं वर्षा नहीं होती तो कारण यह है कि तुम दुष्कर्मी हो दानशीलता से परे हो तथा भोगविलास में लिप्त हो तुम्हारी विपत्तियाँ उस विधाता के प्रति तुम्हारी दुष्टता एवम् अभ्रदता का फल हैं। यदि तुम प्रभु आज्ञा कि अवहेलना करते हो तो अपने परममित्र को छल रहे हो निःसदेह तुम्हारा यह आचरण राह के लुटेरे एंवम् नपुंसकों के समान है,नभ प्रकाशमान इसलिए है क्योंकि वह अपने रचियता की आज्ञा का यथा नियम पालन करता है, फरिश्ते इसलिए प्रकाशित हैं क्योंकि वे प्रभु वन्दना निश्छलता पूर्वक करते हैं। दुष्कर्मियों को चेतवानी देने के लिये ही सूर्य ग्रहण में जाता है, शैतान को अपनी अभद्रता के कारण ही उस उच्चतम देश से निष्कासित किया गया, शैतान जो कि उस अति निर्मल देश में अतृप्त था उसने प्रभु से अधोगमन की आज्ञा माँगी ताकी वह अपने पृथक संसार की सृष्टि कर उस पर अपना शासन स्थापित कर सके। जो भी इस नश्वर संसार से उस अनश्वर देश की पवित्र यात्रा के नियमों का विरोध करता है उसका विषाद की गहराईयों में डूबाना निश्चित है। इस वार्तालाप का कोई अंत नहीं। धैर्य होता तो कटु है परन्तु अन्ततोगत्वा उसके परिणाम अत्यन्त लाभकारी एवं मधुरतम फल सदृश होते हैं। उस राजाओं के राजा परमेश्वर के निकट पहुँचने का यही एक सुगम साधन है। प्रभु के लिए प्रेम, मानव प्रेम का अगला चरण है। जब भी कोई प्रेम का विस्तृत करने का प्रयास करता है ,असफलता ही उसके हाथ लगती है। अन्तर में अकुंरित अनुराग का जब भी कोई वर्णन करने का प्रयत्न करता है वह विहल हुआ है। निःसन्देह,शब्दों के माध्यम से किया गया विश्लेषण कितने ही विषयों पर प्रकाश ड़ाल सकता है परन्तु प्रेम अपनी अभिव्यक्ति स्वयं है इसे शब्दों के सहारे की आवश्यकता नहीं। कारण यह है कि सदा व्यस्त रहने वाली लेखनी भी प्रेम की सीमा पर पहुँच कर ठिठक गयी और चूर–चूर हो गयी। और प्रेम की अवस्था के वर्णन के कगार पर पहुँचते ही वह टूट गयी व कागज भी विच्छिन हो गया।

गुरू अपने गुलाम का आप ही पकड़े हाथ। जिसका हाथ पकड़ा गुरू ने रब के घर ले जात॥
गुरू अपने गुलाम को आप ही पार लगावे। निरंकार परमेश्वर की जोत में समावे॥
आप हिफाजत करे गुरू आप मेहर करे। आप ही गुरूमुख के दिल को शीशे जैसा करे॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते दिल में चमके ज्योति। सीप बनजा गुरू के हाथ की पैदा होवे मोती॥

ईश्वरीय प्रेम

हे ईश्वर की तरफ जाने वाले मुसाफिरों मेरे बचन को सुनो ! ईश्वरीय प्रेम का विश्लेषण करते समय बुद्धि निद्रमग्न हो जाती है उसकी दशा रेत में फंसे गधे के समान हो जाती है, सच तो ये है कि प्रेम ही स्वयं का तथा प्रेमी का बखान कर सकता है दूसरा कोई नहीं । सूर्य का अस्तित्व सूर्य के सिवा और कौन सिद्ध कर सकता है ? ओ मेरी आत्मा अगर वो ना थकने वाली रितु है तो तुम भी उसके प्रेम में विहल होकर गाने वाली ना थकने वाली बुलबुल हो जाओ । तुम भी उसका एक हिस्सा हो और ये ही सच्चाई है, तो तुम भी कुछ दिनो के लिये ऐसे ध्यान करो जैसे वो भी हर जगहा है और तुम भी हर जगहा हो,फिर अगर तुम्हारे दिल में एक गुलाब खिले तो तुम भी गुलाब हो जाना यदि वह एक रोशनी है तो तुम भी रोशनी बन जाना । मेरे दिल की सारंगी पर तुम केवल एक प्यार का गीत बजाओ क्योंकि ये मधुर संगीत मुझे सर से लेके पांव तक प्यार से भर देता है,सच है,जनमों तक मैं इसका ऋण नहीं चुका पाऊँगा जो पाया है मैनें तुम्हारे प्यार के एक लम्हे से मैने ? उस अपने गुलाबी फूलों में घूमते आकाश में हवा की तरह विचरते दोस्त से मैने कहा ओ तुम ! के जिसका मुख गुलाब की कली के जैसा है तू हमेशा अपना चेहरा ऐसे क्यों छुपाये रहता है जैसे कि तू कोई शमा है और तमाम फ़रिश्ते और मख़लूक तेरे चारों तरफ मंडराने वाले तेरे आशिक हैं और उनसे तू बचता फिरता है ? वो हंसा और कहा कि मैं इस दुनियां की सुन्दरता से अलग पर्दे में मैं साफ़ दिखाई देता हूँ और बिना पर्दे के मैं छुपा रहता हूँ । ओ कुल आलम की रोशनी असल में बिना पर्दे के तेरा चेहरा देखा नहीं जा सकता, बिना पर्दे के तेरी आँखों को देखा नहीं जा सकता, जब तक कि सम्पूर्ण बोद्ध ना होवे, जब तक आत्मा पूरी तरहा से जागी हुई ना होवे, जैसे कि सूर्य का सोत नहीं देखा जा सकता ।समुद्र के पास जाओ और देखो उसके ऊपर जो बुलबुले हैं वे बुलबुले उस समुद्र में और समुद्र उन बुलबुलो में है, बस वो समुद्र है और तुम उसके बुलबुले, अगर तुम साफ देखना चाहते हो उसे और अगर तुम साफ देखना चाहते हो उसके वजूद को तो जाओ और देखो कि वो तुममें और तुम उसमें हो जैसे बुलबुले समुद्र के ऊपर आये हुए हैं, तुम उसे प्यार करो और तुम देखोगे कि ये ही असल इबादत है ,और वो तुम्हारे साथ ही था,वो उनकी सुनता है जो दिल की गहराई से उसे तड़पके पुकारते हैं ।

जो गुरू के पीछे चले अपने दिल को धोवे। जो गुरू के पीछे चले मुक्त आत्मा होवे।
जो गुरू के पीछे चले नूर आत्मा होवे। रब की चादर ओढ़ के उसके महल में सोवे।
जो गुरू के पीछे चले गुरू हर मुश्किल से बचावे। हर तूफान से निकाल के कश्ती को ले जावे॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते गुरू का गुलाम बनिये। गुरू के मुख को देखता रह दुनियां की मत सुनिये॥

भगती का एक रूप

गुरू महाराज एक गांव में धर्मसभा करने गये वहां पर उनके प्रवचन थे पहले ही उनको विलम्ब हो चुका था जब उस गांव में आये अपार जन समूह में लोग उनकी व्याकुलता से प्रतीक्षा कर रहे थे, गाड़ी जाकर रूकी, सब आगे से आगे आना चाह रहे थे, जैसे ही सतपुरूष गाड़ी से नीचे पैर रखने को हुए, एक माता ने जो अपने गले में दुपट्टा डाला हुए थी, आधा गले में और आधा जमीन पर बिछा दिया कि गुरूदेव इस दुपट्टे पर पैर रखकर उतरये गुरूदेव ने बहुत मना किया पर सुनता कौन है ? उन्होने कहा भी मेरी बहन तुम्हारा गला इस दुपट्टे से भिंच जावेगा एक तरफ हट जाओ ये किसी भी तरह उचित नहीं कि हम इस दुपट्टे पर पैर रखके उतरें ? पर नहीं उस माता की आँख में आँसू आ गये, गुरूमहाराज मेरी बिनती को आप सुनलो मानलो मेरी आत्मा शान्त हो जावेगी, सब बातें एक तरफ और उस माता की जिद और भगती एक तरफ आखिर गुरूमहाराज को उस श्वेत दुपट्टे पर पैर ही रख कर उतरना पड़ा ।

भगती का दूसरा रूप

तिलहर शाहजहांपुर में सतसंग था शाम का समय हुआ गुरू महाराज बचन फरमाने के लिये गाड़ी से वहाँ पहुँचे जहां अपार जनसमूह उनके दर्शनो का इन्तजार कर रहा था, शाम के पांच बजे थे,सेवादार भीड़ का हटाते हुए आगे बढ़ रहे थे, गुरूदेव ने एक तरफ अपनी पादुकाये यानी चप्पल उतारकर एक को इशारा किया इनको उठालो और एक तरफ रख देना, हद तो ये है कि कई बार गुरूदेव के चप्पल भी सतसंग में उठ गये, तब एक सतसंगी ने चप्पल उठा लिये, दूसरा आया वह लेने लगा दोनो में छीनाझपटी होने लगी और दूसरे ने वे चप्पल उचक लिये और सिर पर रखकर इतनी जोर से गुरूगद्दी की तरफ को भागा कि लोग देखते रह गये और किसी को ये समझ ना आया कि क्या हुआ है और आखिर माज़रा क्या है ? तो लीजये ये भी एक झलकी है गुरूभगती और गुरू के प्रेम की जिसमें आदमी अपने होश हवास खो बैठता है और नहीं सोचता कि दूसरे क्या कहेंगे दूसरे क्या सोचेंगे ? जो चाहे सोचते रहें जो चाहे कहते रहें ?

सतगुरू अपने सेवक की रोशन करते आत्मा। सतगुरू अपने सेवक की निर्मल करते आत्मा॥
अपने सेवक के हिरदै में मोती की खेती करते। एक एक सीप को धो धो के जतन से साफ करते॥
खुद दुख सह कर सतगुरू सेवक के दुख दूर करे। मुश्किलें उठाकर के उसके दिल में नूर करे॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते जो गुरू के चरणों पे पड़ा। एक दिन वो परमेश्वर के महल में जाके खड़ा॥

प्रेम का विश्लेषण

प्रेम का विश्लेषण करते समय बुद्धि तक निद्रामग्न हो जाती है व उसकी दशा रेत में फँसे एक गधे के समान हो जाती है। सच तो यह है, प्रेम ही स्वयं का तथा प्रेमी का बखान कर करता है। सूर्य का अस्तित्व सूर्य के अतिरिक्त कौन सिद्ध कर सकता है ?यदि तुम्हें उसकी उपस्थिति का प्रमाण ही चाहिए,तो उसका सामना करके देखो। इसी प्रकार यदि जानना चाहते हो कि प्रेम क्या है तो प्रेम करके देखो क्योंकि कर्म से ही ज्ञान है। इस संसार में विरोध का विधान व्याप्त है– मिथ्या,सत्य को व गर्म,शीतल को प्रमाणित करता है। ऐसे ही छाया,सूर्य की पुष्टि करती है। आत्मा के दर्पण पर प्रतिबिम्बित उसका (सर्वोच्च सूर्य का) तेज,ईश्वर की विद्यमानता का प्रतिक है। भ्रमणकारी सूर्य के समान इस संसार में कुछ भी नहीं। अन्तरात्मा का रवि समस्त अंधकारों एवं दुविधाओं का निराकारी है। यह दृश्यमान सुर्य अपने प्रकार का एक ही है, परन्तु उसके सदृश्य हम एक और सूर्य की भी कल्पना कर सकते हैं। परन्तु वह सूरज जो उच्चतम सौर मण्डल को प्रकाशित कर रहा है, अनुपम एवं कल्पना से परे है। बुद्धि मानस दर्शन भी नहीं कर सकती क्योंकि उसके तुल्य इस संसार में कुछ है ही नहीं। ईश्वर के अस्तिव का आंकलन मानव कल्पनाशक्ति के बस की बात नहीं,हमारी परिकल्पना की उड़ान उसकी या उसके पर्याय की प्रदक्षिणा भी नहीं कर सकती। सच्चे गुरु प्रकाश के प्रतिरुप हैं। वे सूर्य हैं,सच तो यह है कि व सम्पूर्ण सत्य की ज्योति हैं। उस चौथे आकाश उच्चतम सौर मण्ड़ल के सूर्य ने अपना मुखड़ा चादर में छिपा लिया। पर अब जबकि मैंने उनका नाम ले ही लिया है तो मुझे उनकी कृपाओं का भी वर्णन करना चाहिए। जिस प्रकार यूसुफ की कमीज़ की खुशबू से याकुब जोसेफ़ के पिता अपनी सुध बुध खोकर आत्मा रुप हो जाते थे,उसी प्रकार शम्स तबरेज़ी की चर्चा मात्र से मैं तन का होश खो, आत्मारुप हो गया।

वर्षों तक मुझे उनके संग का सोभाग्य प्राप्त हुआ और मुझे उस आनन्द की थोड़ी बहुत अभिव्यक्ति तो करनी ही पड़ेगी, ताकि यह पृथ्वी व अम्बर परमपुरख की अनुभूति कर सकें और खुशी से खिलखिला सकें,तथा बुद्धि,आत्मा एवं दृष्टि ज्ञान का सौगुना विस्तार हो सके।

जो ईमान के रस्ते पे वो कभी गिर सकता नहीं। सच के साये में जो खड़ा वो कभी मिट सकता नहीं ।।
झूठ की जो खेती बोवे रो रोके वो काटे। परमात्मा तो अच्छे बुरो को अलग अलग छाँटे ।।
अपना नाम लेने वालों को प्रभ सीने से लगावे। लोभी लालची को यमराज नरक में ले जावे ।।
फुलसन्दे वाले बाबा कहते कर सच्चाई की खेती। सच की दौलत सितारे को सूरज बना देती ।।

मैंने अपनी आत्मा से कहा

मैंने अपनी आत्मा से कहा—तू अपने उस आसमानी प्रभ प्रियतम से उतनी ही दूर है जितना रोगी चिकित्सक से, क्योंकि मैं अपने प्रियतम में विलीन हो चुका हूँ इसलिए मुझे कुछ भी कहने के लिए विवश न किया जाए,मेरी ग्रहण शक्ति तो मृतप्राय हो चुकी है। मैं तो अपने प्रियतम की यथायोग्य प्रशंसा भी नहीं कर सकता और करना न करने के समान होगा, क्योंकि प्रशंसा चेतना का प्रमाण होगी व प्रेम में चेतना का स्थान कहाँ ? यदि तुम प्रेमी हो तो तुम्हारे प्रतिबोध में प्रियतम के अतिरिक्त और किसी के लिए स्थान कैसे हो सकता है ? और यदि वास्तव में तुम्हारी चेतना में एकमात्र वह ईश्वर ही है तब तो तुम उसमें पूर्णरुप से विलीन हो तथा तुम्हारा अपना कोई अस्तित्व हो ही नहीं सकता। अब तुम अपने विरह के दुःख का वर्णन किसी और काल के लिए स्थगित करो। शीघ्रता करो क्योंकि समय तलवार की धार के समान तेज़ है। वह किसी की प्रतीक्षा नहीं करता ,गुरु के प्रति प्रेम ही आत्मा का भोजन है, वक्त गुरु ही सच्चा संत है। जो गुप्त हो चुके हैं, वे हमारे सहायक नहीं हो सकते। उनका अनुसरण करके हम प्रभु को नहीं पा सकते। वक्त गुरु सर्वज्ञानी व सर्वसमर्थ हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो तुम निर्मल हृदय खोजी हो ही नहीं, क्योंकि तुम उन पर आश्रित हो जिन्हें सत्य ईश्वर का ज्ञान ही नहीं, यह तो उधार लेने के समान हुआ, सावधान,ऋण तुम्हारे मूलधन का विनाशक है अर्थात् झूठे गुरुवों का परित्याग करो जो लोभलालच में तुम्हारा हाथ पकड़कर तुम्हें जगत के कीचड़ में लेकर चल रहे हैं,मैने आत्मा को समझाया कि प्रियतम के रहस्यों का गूढ़ रहना ही उचित है उनको मुंह से ना कह और उस आसमानी प्रीतम के सामने शरमिन्दा होने से बच,तुम्हारा पड़ौसी, तुम्हारा साथी , तुम्हारे साथ सफ़र करने वाला तुम्हारा दोस्त वो ही है, ध्यान करने वाले के ध्यान में और उस हुजरे में जहां वो है वो ही है राजा की शाही पौशाक में और गरीब के कपड़ों में भी वो ही है,लोगों के हजूम में, भरी सभा में, और मिलने के गुप्त स्थानो में भी वो ही मौजूद है,उसकी कसम वो सब जगहा मौजूद है,दोबारा कहता हूँ उस ईश्वर की कसम वो हर जगहा मौजूद है जब तुम जागते रहते हो तब भी और जब तुम सो जाते हो तब भी ।

ज अन्दर नम सद ख़मोशीखुश नफ़स। दस्त बर लब मी ज़िन्द यानी के बस॥
मेरे भीतर सौ ख़ामोशियां खुशबू बनकर मेरे होठों पर हाथ रखती हैं , के बस ख़ामोशी समन्दर है और बोलना नहर, तुझे समन्दर तलाश करता है, तू नहर को तलाश ना कर ।
खामोशी सौ खुशबू बनकर मेरे होठों पे हाथ रखती है ।
के बस ख़ामोश रह रूह उस रब को याद करती है ।।

तारों का कारवाँ

अ मेरे मेहरबाँ मेरे परमात्मा
ढूंडते हैं तुझे तारों के कारवाँ।
फूल हैं तुझसे ख्वाब हैं तुझसे
तू मेरे उजड़े गुलशन का है बागबाँ॥

अ मेरे परमेश्वर ! तू ही मेरा सच्चा दोस्त और महबूब है, तुझे आदिकाल से तारों यानी रूहों के कारवां तलाश करते हैं और आज तक उनकी तलाश जारी है, तू ही है जिसकी वजहा से फूल खिलते हैं, तेरी ही वजहा से आँखें और जमीन आसमान ख्वाब देखते हैं और तेरे ही प्रेम में निमग्न संतजन और परिन्दे रात दिन तुझको पुकारा करते हैं ।

नहीं है कोई भी नाम तेरा
ज़मी है तेरी आसमान तेरा
फ़रिश्ते तेरे इन्सान तेरा॥

अ परमेश्वर ! तेरा कोई नाम नहीं लोगों ने अपने प्यार में तेरे बेशुमार नाम रख दिये हैं इतने नाम कि उनको गिना भी नहीं जा सकता, पर तू तो अनन्तकाल तक चमकने वाली ज्योति है, जो हर किसी के भीतर पोशीदा यानी छुपी है, ये ज़मीन आसमान इन्सान और फ़रिश्ते तमाम मख़लूक का सिर्फ़ तू ही एक मालिक है तेरे सिवा दूसरा कोई नहीं है तेरे सिवा जो किसी और को अपना ईश्वर मानता है वो मूर्ख जाहिल और अहमक है, जबकि ज़मीन आसमान फ़रिश्ते और पवित्र आत्मायें रात दिन तेरी ही स्तुति करते रहते हैं ।

चाँद जैसे चेहरे धोखा देंगे तुझे
रूलायेंगे तेरे ही अपने तुझे
चल रब के घर अब कसम है तुझे।

दुनियां में चाँद जैसे चेहरे वाले और सरू के पेड़ की तरहा लम्बे हसीन लोगों के फ़रेब में मत आना, ये सूरत से हसीन पर दिल से बदसूरत और सियाह हैं,तेरे अपने ही तुझे दुख देंगे,अब अपने परमात्मा की तरफ को अपना मुंह कर तुझे मेरी कसम ।

सिवा उसके कोई ईश्वर नहीं
कोई उसकी हद से बाहर नहीं
सिवा तेरी रूह के उसका कोई घर नहीं।

जिस ईश्वर ने सूरज चाँद सितारे देवता स्वर्ग और इन्सान को बनाया है सिर्फ वो ही परमात्मा है, उसके अलावा लोग जो और और पूजा करते हैं उनके चक्कर में ना पड़ वह शैतान का फ़रेब है क्या देवी क्या देवता क्या फ़रिश्ते क्या संतफकीर व गुरू कोई भी उस परमेश्वर के हाथ से बाहर नहीं, तू उस एक को ही अपना ईष्ट बना, किसी और के हाथों अपनी आत्मा को ना बेच ।

दिल से होके जाता है उसका रास्ता
नेकी सच्चाई है उसका रास्ता
बुलाता है तुझको उसका रास्ता।

उस ईश्वर का रास्ता तेरे जिस्म दिल और रूह यानी आत्मा से होके जाता है,नेकी और सच्चाई को जो अख़्तयार नहीं करते वे उस तक नहीं पहुँचते मेरी इस बात को तू पल्ले में बाँध ले,तुझे उस प्रभु का रास्ता बुलाता है, दुनियां में इस सोने जैसी जिन्दगी को बरबाद ना कर मट्टी ना कर

रब के जैसा चेहरा मेरे यार का
मेरा दिल है काबा मेरे यार का
वो रब है साया मेरे यार का।

मैने निगाह जमाकर देखा तो मेरे सच्चे गुरू का चेहरा परमेश्वर के नूर से चमक रहा था,मैं सोचता हूँ के वो प्रभ और कैसा होगा ? मेरे गुरू के जैसा ही होगा,मेरे गुरू का जिस्म है और उस परमात्मा का कोई जिस्म नहीं वो फ़कत नूर ही नूर है उसका रौशन साया ही मेरा सच्चा गुरू है ।

आँख उठाके देखा तो कुछ भी ना था
एक नूर था और कुछ भी ना था
ना मैं था ना वो था कहीं कुछ ना था।

जिस्म से परे जब मेरी रूह आसमानो में पहुँची तो मैने देखा कि बस नूर ही नूर था इसके सिवा कुछ ना था, रोशनी का समन्दर था मेरी रूह नदी की तरहा उस समन्दर में गुमती थी, ना आत्मा थी ना दुनियां थी ना वो था ना मैं था नूर था बस,

सुलेमान का ताज़ टेढ़ा हो गया
नफ़्स जब उनके सिर चढ़ गया
नशा उतरा तो ताज़ सीधा हो गया।

पैग़म्बर सुलमान जिनके महल में हीरे मोती सोने की अशर्फियां जड़ी थीं एक वक्त ऐसा आया कि उनके दिल में अपने लिये ज्यादा खुशगवारी और अहंकार सा पैदा हुआ उनका तख़्त हवा में उड़ता था एक चींटी हंसी उसका हंसना देख उन्होने अपना तख़्त नीचे उतारा और नागवारी में कहा अ गुस्ताख़ क्या तू सुलमान को नहीं जानती ? चींटी हंसके बोली खूब जानती हूँ तुझमें जो खूबी है वो उस परमात्मा की है तेरी अपनी नहीं अ भले आदमी तकब्बुर ना कर,नहीं तो अपनी ताकत से तू चल अब इस तख़्त को उठा तो ले,सुलमान ने बहुत जोर मारा तख़्त ज़रा भी जमीन से ना उठा तब वो सजदे में गिर गया और माफी मांगी लोगों में उसकी हंसी हुई ताज उसकी अपनी कमी से टेढ़ा हो गया यानी अपयश मिला जब कमी समझली तो सब ठीक हो गया ।

ख़ामोशी ने मेरे मुँह पे हाथ धरा
चुप रह रूह ने रब को याद करा
ख़मोशी है सौ खुशबुओं की तरहा।

मुझे मेरे गुरू ने कहा सुन खामोश रह ये खामोशी सौ खुशबुओं की तरहा है ज्यादा बोलना अपनी जान को मुश्किल में डालना है चुप रह और उस मालिक को याद कर ।

दोनो जहाँ का तू सुल्तान है
मेरी ज़िन्दगी तेरे नाम है
लब पे मेरे तेरा नाम है।

अ परमात्मा ! तू दोनो दुनियां का बादशाह है, मेरी जिन्दगी मेरी दुनियां सब तेरे नाम है, तेरा ही दिया चिराग़ मेरे घर में रोशन है,रात दिन अ सच्चे रब तेरा ही नाम मेरे

होठों पर है, सिवा तेरे किसी और को गैर को मैं अपना दोस्त नहीं समझता ।

मैं जिन्दा हूँ सिर्फ तेरे लिये
है सीने में साँस सिर्फ तेरे लिये
आँखें बिछाई हैं तेरे लिये।

अगर मैं जिन्दा हूँ तो ये सिर्फ तेरा रहमो करम है, अगर मेरे सीने में साँस चल रही है तो ये तेरा रहमो करम है, मेरी आँखें रात दिन उन लोगों का रस्ता देखती हैं जो तेरे दोस्त हैं, सिवा तेरे जो किसी और का ज़िक्र अपनी जुबान पर नहीं लाते, जो रात दिन तेरे मुहब्बत के नशे में चूर हैं।

तू दुनियाँ मेरी तू है मेरा जहाँ
तेरे बिन ज़िन्दगी ज़िन्दगी कहाँ
मैं कुछ भी नहीं बस हूँ तेरा निशां।

अ मेरे सच्चे सिरजनहार तू ही मेरी दुनियां और मेरा जहान है तू ही मेरी ख़्वाहिशों की मंज़िल है, तेरे बिना ये ज़िन्दगी बेनूर और वीरान है बेकार है ज़िन्दगी ज़िन्दगी ही नहीं, आदमी क्या है सिर्फ अ परमेश्वर तेरी रोशनी का एक धब्बा है बस ।

मेरा चाँद है तू है दिलबर मेरा
तू मंज़िल मेरी तू सफ़र है मेरा
दिल तेरी तरफ पैर धरती पे मेरा।

अ मेरे परमेश्वर ! तू मेरी अंधेरी ज़िन्दगी का चाँद है, तू ही मेरा सफ़र और तू ही मेरी मंज़िल है, मेरा दिल तेरी महफ़िल में और मेरे पैर ज़मीन पर हैं ।

दुनियाँ की हवा से चिराग़ बचा
दुनियाँ के दोस्तों से ख़ुद को बचा
उस रब के वास्ते ख़ुद को बचा।

दुनियां की हवा से अपने ईमान के चिराग़ को बचा दुनियां के गरजमन्द और मक्कार दोस्तों से अपनी रूह को बचा दुनियां की चमक पर जान ना दे ये सब बनावटी चीजें हैं ये शैतान का मकर और उसका जाल है जो आदिकाल से आत्माओं को फांसता चला आ रहा है तू दुनियां की और अपने दिल की मीठी बात ना मान गुरू की मान ।

दो पैग़म्बर कभी लड़ते नहीं
दो लालची सच्चे दोस्त बनते नहीं
कौव्वे कभी हंस बनते नहीं।

परमात्मा के दो सच्चे दोस्त जिनके दिलो में उस रब की मुहब्बत जोश मारती है वे कभी एक दूसरे के दुश्मन नहीं होते और दुनियां के लालची लोग वे कभी एक दूसरे के प्रति वफ़ादार नहीं होते, उनकी दोस्ती और मुहब्बत उनके स्वारथ लालच और मतलब पर कायम होती है वो कच्ची रेत की दीवार की तरहा है जिसे गिरने में ज़रा देर नहीं लगती ।

फुलसन्दे वाले बाबा कहें
सच्ची आत्मा प्रभ के घर में रहें
धोखेबाज़ बरबाद होके रहें।

फुलसन्दे वाले बाबा कहते हैं सच्ची और पवित्र आत्माओं का ठिकाना उस परमात्मा का घर है और जहां उसका ज़िक्र होता है वहीं उस कुदरत की मौजूदगी सिद्ध होती है और जहां मक्कार झूठ बकने वाले, दोस्त बनाके धोखा देने वाले बसते हैं उसी को स्वार्थी लोगों के द्वारा बसाया हुआ नरक समझना चाहीये,ये दुनियां और वो दुनियां सच्चे आदमी के वास्ते है, झूठे लोग यहां भी ख्वार होते हैं और वहां भी ।

जो सच्चे गुरू का होता है सच्चा गुलाम। सीस झुकाके जग में वो करता नेकी के काम॥
जो गुलाम सच्चे गुरू का बड़े ना बोले बोल। एक एक बोल को विधाता रहा तराजू तोल॥
इज्जत दौलत धूल है सब गुरू चरणों की। सच्चा सेवक धूल है फकत गुरू चरणों की॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते जिसने खुद को मिटा डाला। परमेश्वर के हाथ का खुद को फूल बना डाला॥

अ दुनियां जहान के सुल्तान !

या रब्ब ! ब कसे मरा रसाई ना बुवद
उम्मीदेवफ़ा ओ आशनाई ना बुवद।
दर दायरा ए तजरिबा पाबंद शुदम
ग़ैर अज़ दरे रहमतत रहाई ना बुवद।

अ दुनियां जहान के सुल्तान ! अ करम करने वाले ! ऐसी रहमत कर कि मुझे किसी दूसरे के पास मदद माँगने के लिये ना जाना पड़े और ना ही मुझे किसी दूसरे की मुहब्बत और दोस्ती का सहारा लेना पड़े, मैं इस हमेशा बदलती रहने वाली दुनियां के दायरे में कैद हूँ बिना तेरी रहमत के मैं इससे आज़ाद नहीं हो सकता ।

हर कस ज़ि ख़ुदा दौलतो दीं मी तलबद,
या सीमबबरी माहे ज़बीं मी तलबद।
बे चारा दिलम न आं न ईं मी तलबद,
ख़्वाहाने विसाल अस्त ओ हमीं मी तलबद॥

हर कोई उस रब से दीन दौलत और चाँद से मुखड़े वाले ख़ूबसूरत महबूब के लिये दुआ करता है,मैं इनमें से कुछ नहीं माँगता,मैं सिर्फ़ उससे विसाल यानी उसमें एक रूह एक जान होना माँगता हूँ ।

ईं मर्दुमे दुनियां ज़ि ख़ुदा बेख़बर अंद,
हर शामो सहर दर तलबे सीमो ज़र अंद।
अज़ पहलू ए हमदिगर जिगर रेश तर अंद
हर चंद किह चूं बादे सबा दर गुज़र अंद॥

ये दुनियांदार लोग उस परमात्मा से बेख़बर हैं ये रातदिन सिर्फ़ सोनेचाँदी के लिये तड़पते हैं ये एक दूसरे से मिलते भी हैं मगर इनके दिल में दुख और रोष भरा है ये नहीं समझते कि ज़िन्दगी हवा के झोक की तरहा झट पट गुज़र जायेगी ।

आं कीस्त किह ऊ ज़ुहदो रिया नशनासद
दर मकरो दग़ा ख़ुदा चू मा नशासद
गुफते किह मख़ुर बादा चू मन ज़ाहिद
ईं रा ब कसे गो किह तुरा नशनासद॥

तुम दिखावे की इबादत को तपस्या कहकर किसे धोखा देने की कोशिश कर रहे हो ? क्या तुम यह नहीं जानते वो प्रभ हमारे सब मकारी फरेब जानता है तुम कहते हो कि हमारी तरहा शराब भी पीते रहो दुनियां के ऐब और बुरे काम भी करते रहो और तपस्वी भी बने रहो यह बात उससे कहो जो तुम्हारी असलियत को नहीं जानता हो।

ता नीस्त न गर्दी रहे हस्तत न दिहंद
ईं मर्तबा बा हिम्मते पस्तत न दिहंद
चूं शमअ करारे सोख़्तन ता न दही
सर रिश्ता ए रोशनी बदस्तत न दिहंद।

जब तक तू मरना नहीं जानता तू असल में ज़िन्दा नहीं है लेकिन यह दर्जा कम हिम्मत वालों को नसीब नहीं होता जब तक तू शमा की तरह नहीं जलेगा तुझे अन्दरूनी प्रकाश हासिल नहीं होगा

गिला शिकवा इख़्तिसार मी बायद करद
यक कार अज ईं दो कार मी बायद करद
या तन बरज़ाए दोस्त मी बायद दाद
या जान बरहश निसार मी बायद करद।

अ रब के बन्दे ! तू अपने को देख तू शिकवे शिकायत बन्द कर तू दोनो रास्तों में से कोई सा भी रास्ता चुन ले तू या तो अपने जिस्म को खुदा की रज़ा के आधीन करदे या अपनी रूह को उसकी राह में न्योछावर कर दे ।

जो सरदारी चाहवे जग में सिर भी चला जाता। जो कोई झुक झुक के चले वो ही अमरत पाता॥
जो गुरू के पीछे चले पावे अतुल खजाना। मनमुख कुत्ते सा फिरे उदर दर जूते खाना॥
गुरू चरणों पे खुद को मिटादे बन जावे तू चिराग़। बुझ जावे तेरे दिल से तृष्णा दुख की आग॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते तुझे सतगुरू करे रोशन। कर गुरू को बंदगी सांस सांस पे कर नमन॥

सच्ची दौलत।

एक अमीर व्यक्ति एक दीवार पर लगी पेंटिंग देखकर चकित रह गया पानी में एक भैंस के ऊपर एक बच्चा बैठा बाँसरी बजा रहा है वो पेंटिंग उसे इतनी अच्छी लगी कि वो मकान के मालिक से बोला ये पेंटिंग तो आपको लाखों की कीमत में मिली होगी ? वो बोला नहीं ये मुझे बिना किसी कीमत पर कलाकार ने उपहार में दी थी वो एक संत स्वभाव का सच्चा कलाकार था । उस अमीर ने कहा चलो ये पेंटिंग आप मुझे देदो जितने लाख चाहे लेलो वो गृहस्वामी मुस्कुराया कहा प्यार और विश्वास को मेरे भाई बेचा नहीं जाता आप मुझे क्षमा करें मैं ये तस्वीर किसी कीमत पर भी तुमको नहीं दे सकता, उस अमीर ने कहा क्या तुम मुझे उस महान कलाकार से मिलवा सकते हो ? उसने कहा जरूर, चलो, और वो एक लम्बी यात्रा करके एक मठ जैसे आश्रम में पहुँचे जहाँ एक शान्त स्वभाव वाला श्वेतवस्त्र धारी संयासी कुछ लोगों को ईश्वरीय प्रकाश और उस प्रभु की आराधना के बारे में समझा रहा था उस अमीर ने अचरज से कहा ये तुम मुझे कहां ले आये उसने कहा जरा धीरज रखो वो महान कलाकार तुम्हारे सामने है, ये सन्यासी ही वो कलाकार है उसके अचरज का ठिकाना ना रहा, उसका सिर श्रद्धा से झुक गया, कहा मैनें आपकी बनाई अद्‌भुत पेंटिंग देखी थी और उसी की वजहा से यहां तक खिंच के आ गया हूँ आप तो बहुत अच्छे कलाकार हैं, आप तो करोड़ो रूपये कमा सकते थे, आपने पेंटिंग बनाना क्यों बन्द कर दिया, वो संन्यासी मुस्कुराये कहा मैं आज भी पेंटिंग बना रहा हूँ, यानी लोगों के दिलों को परमेश्वर के प्यार से रंग रहा हूँ, रही करोड़ो की बात ? मैं वो सम्पदा कमा रहा हूँ जो अरबो खरबों में भी गिनी नहीं जा सकती, वो अमीर चकित हुआ कहा वो धन क्या है ? सन्यासी ने कहा वो है मनुष्यों का सच्चा प्यार । वो सन्यासी पता है कौन थे ? वो थे अपने प्यारे सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वाले ।

प्रभ तू चाँद पूनम का मेरा मन है चकोर। है तेरा चाँदना मेरी रूह में फैला है सब ओर॥
हे प्रभ तू है फूल गगन का मेरा मन है भौंरा। फूल के चक्कर काटे रात दिन ये मेरा मन भौंरा॥
जैसे शम्मा पे परवाना खुद को फ़ना करता। ऐसे मैं जलूं और जमाना लाख मना करता॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते तू सीप मैं मोती। मैं संसार का अंधयारा तू गगन की ज्योति॥

हक हलाल की रोटी

एक सन्यासी एक ग्रहस्थ के यहां अतीथि हुआ ग्रह स्वामी ने उस सन्यासी से खाना खाते वक्त एक सवाल पूछा महाराज हक हलाल की रोटी कैसी होती है ? कहा कभी मेरे गुरू से मिलना तो वो तुमको समझा देंगे मेरा ज्ञान इतना अधिक नहीं है जो तुमको सन्तुष्ट कर सकूं । समय बीता एक वक्त वो ग्रहस्थ सन्यासियों के एक आश्रम में आया वो ही आश्रम जहां का सन्यासी उसके घर गया था उसे ढूँडता हुआ वो जंगल में उस जगहा पहुँचा जहाँ बहुत से सन्यासी खेत में दरांत लिये गेहूं काट रहे थे उस सन्यासी से वो मिला और कहा आपके गुरूदेव कहाँ हैं क्या वो आश्रम में ही हैं ? वहाँ मुझे उनके दर्शन नहीं हुए उस सन्यासी ने कहा उधर देखो गुरूमहाराज हाथ में दरांत लिये गेहूँ काट रहे हैं वो आदमी चकित हुआ उसने सोचा था वह ऐसे किसी साधु के पास जा रहा है जो किसी तखत पर आसन लगाकर बैठे होंगे वो उनके चरणों में झुक गया कहा गुरूदेव आप सन्यासी होकर मजदूरों जैसा काम कर रहे हैं क्या ये उचित है ? गुरूमहाराज मुस्कुराये कहा क्या फिर हम लोगों को गांव गांव जाकर भीख मांगनी चाहिये ? और अदना से अदना शराबी कबाबी बेशरम गृस्थों की गालियां उनके दरवाजे पर जाके खानी चाहियें ? संत उस आसमान वाले के सच्चे दोस्त हैं और वो जो किसी पर बोझ ना बने और सिवा ऊपर वाले के किसी के आगे हाथ ना फैलावे और पहले अन्न पकाके दूसरों को खिलावे माता पिता अतीथि बीमार कमजोर आदि को पहले खिलाके बाद में खावे परमात्मा ने जो दिया है उसमें सबर संतोष करे व्याकुल आत्मा वाला ना बने और उन किसान मजदूरों जैसा भी ना बने जो रात दिन मट्टी में हाथ दिये बैठे रहते हैं और कहते हैं कि हमें परमात्मा का नाम लेने की फुर्सत कहां है और दुख तकलीफ़ के वक्त वो परमात्मा को उलाहने देते हैं के हाय तू हमारी सुनता नहीं, मेहनत मजदूरी भी करो और उस आसमान वाले का नाम भी लो और ये सोचो कि उस रब को जाके मुंह दिखाना है, ये ही है हक हलाल की रोटी और मालूम है मजदूरों की तरहा काम करने वाले रोज निर्जल उपवास रखने वाले हर घण्टे पर आराधना करने वाले, ये थे गरीबों और बेसहारा लोगों को प्यार करने वाले सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वाले ।

मछली सागर के बिना किस तरहा से जीवे। मेरा हंस तेरे बिना हे प्रभ कैसे जीवे॥
परवाना शम्मा पे तड़प तड़प देवे ज्यों प्राण। प्रभ तेरे हुस्न चिराग़ पे मंडराते मेरे प्राण॥
तेरी सूरत से कैसे हटें मेरे नैन। तुम को सजन देखे बिना एक पल को नहीं चैन॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते तू सागर में प्यास। मुझे संसार से काम क्या एक तेरी आस॥

झाड़ू

मेरे सतगुरू तेरे द्वार पे झाड़ू लगाऊँ मैं।
बिगड़ा हुआ नसीब अपना बनाऊँ मैं॥

सच्चे गुरू के घर की सेवा मुश्किल से किसी को नसीब होती है सच तो ये है कि सच्चे गुरू सपने में भी हासिल नहीं होते और जब हासिल होते हैं उनकी पहचान हर किसी को नहीं हो पाती, लोग संसार की कामना लेकर आते हैं गुरूमहाराज नौकरी लग जावे, गुरू महाराज शादी हो जावे, किसी के दिल में शौक सच्चे मालिक से मिलने का नहीं है, सो वह तो गुरू की मेहर से ही पैदा होता है। जिसे गुरू के दर की ख़ाकसारी मिल गई वो दुनियां का सुल्तान हो जाता है ये सच है।

जिसे तेरे दर की सेवा मिली
उसे दुनियाँ भर का प्यार मिला।
तेरी मेहर से सतगुरू
परमेश्वर निरंकार मिला॥

जिसे गुरू के चरणों में प्यार आ गया, परमात्मा उसे सीने से लगाकर घूमता है, वह आदमी आसमान के माथे को जरूर चूमता है, उसे एक दिन वह सच्चा सिरजनहार जरूर मिलता है पर मिलता उनको ही है जो उसके इशक में तड़प रहे हैं।

गुरू का दामन जिसने पकड़ा पहुँचा प्रभ के द्वार।
गुरू किरपा से उजड़े गुलशन हो गये गुलज़ार॥

जिसने गुरू का दामन पकड़ लिया यानी गुरू के सामने ना दुनियां वालों को, ना आसमान वालों को कुछ समझता है, जिसको जीना मरना गुरू के हुकम में है, उसके भीतर से करामत पैदा होती है ये निश्चित है। गुरू की किरपा और मेहर से उजड़े गुलशन और ज़िन्दगी गुलज़ार होते हैं।

गुरू ने सिर पे हाथ धरा तो ब्रह्म उजाला पाया।
दुख कलेस मिट गये मैने सब सुख पाया॥

गुरू जिसके सिर पे हाथ रखदे उसके भीतर ईश्वर का उजाला पैदा हो जाता है, दुख कलेस खतम होके आत्मा में शीतल परकास फैलने लगता है।

मेरे गुरू के काफ़ले में अच्छे बुरे सब लोग।
सबके दुख गुरू ने लेलिये काट दिये दुख सोग॥

सतगुरू जिन आत्माओं को लेकर परमेश्वर की तरफ जा रहे हैं उनमें पढ़े लिखे अनपढ़ बच्चे बूढ़े पुण्य आत्मा पाप आत्मा गिरे पड़े बीमार आत्मा और निर्मल आत्मा, यानी हर तरहा के लोग हैं, और सतगुरू आवाज़ देते हैं अ लोगों घबराओ नहीं मेरे कारवां में सब तरह के लोग हैं तुम चाहे कैसे भी हो अच्छे या बुरे मेरे पास आओ, मेरे साथ परमेश्वर के मार्ग में आओ, मैं तुमको शन्ति दूंगा, मैं तुमको ईश्वर का उजाला दूंगा, तुम डरो नहीं, मैं तुमको पवित्र करने के लिये आया हूँ।

गुरू की सूरत में पाया मैने परमेश्वर निरंकार।
जिसको गुरू की सेवा मिली वो ही हुए हैं पार॥

जानने वालो ने ये जाना है देखने वालो ने ये सच देखा है कि गुरू की सूरत में परमात्मा छुपा है, गुरू के लिबास में परमात्मा धरती पर है जिसने गुरू की सेवा की है उस पर ये रहस्य प्रकट हुआ है, तुम इस बचन को सच मानो,गुरू का अनुसरण ही सेवक का फर्ज है।

मेरा मन मेंहदी हुआ ला तेरे पैरों से लगाऊँ। सच्चे सजन परमात्मा तुझपे बल बल जाऊँ।।
तू मेरी आँखों का तारा तू चाँद मेरे मन का। तेरा नाम ही लेवे रात दिन सांस सांस का मनका।।
अपने रंग में रंगदे रंगीले सदा सदा रहूँ तेरी। तू मेरा दूल्हा अविनासी मेरी आत्मा दुल्हन तेरी।।
फुलसन्दे वाले बाबा कहें गुरू किरपा से प्रभ पाया। जिनको सच्चे गुरू ना मिले जग में जनम गवांया।।

सतगुरू सत की जोत हैं नरक से जीव निकाले।
गुरू किरपा से हो गये घट में अगम उजाले।।
सतगुरू ने असंख्य आत्माओं को नरक से निकाला है गुरू किरपा से आत्मा में प्रकाश हुआ है ।
सच्चे गुरू ने नूर का प्याला मेरे होठों से लगाया
अजर अमर परमेश्वर का घर
जीते जी दिखलाया।।
गुरू ने मेरे होठों से ईश्वर के नूर का प्याला लगा दिया है, उस परमेश्वर का घर गुरू ने मुझे जीते जी दिखला दिया है ।
सतगुरू सच्चे बादशाह सतगुरू प्रभ के मीत।
जिसने करी सतगुरू की सेवा
उसने लिया जग जीत।।
सच्चे गुरू परमेश्वर के दोस्त हैं, जिसने गुरू की सेवा करी वह संसार में सर्वोच्च हो गया ।
गुरू को मानुष मत समझ
गुरू को समझ करतार।
परमेश्वर की जोत का सतगुरू हैं उजियार।।
गुरू को मनुष्य ना समझना वो मनुष्य के जामे में छुपा हुआ परमात्मा है, वह परमात्मा का नूर है, वो नूर तुझे गुरू से मिलेगा ।
आँखों को खोलके देख ज़रा
गुरू तुझको जगाने आये
परमात्मा का चाँदना इस संसार में लाये।।
तेरी अकल दुनियां में खोई है गुरू तुझको परमात्मा की तरफ बुलाते हैं वे ईश्वर की रोशनी को लेके आये हैं ।
पैर दबाऊँ अपने गुरू के पंखा चवंर डुलाऊँ।
गुरू के चरणों का जल पीके
अजर अमर हो जाऊँ।। १२
गुरू के पैर दबाऊँ पंखा करूं उसके चरणों को धोके पीता रहूँ ।
सतगुरू ने जब बक्शा मुझे परमेश्वर का नाम।
उजली हो गई आत्मा बन गये सब काम।।
गुरू ने जब मुझे परमेश्वर का नाम जपने को दिया मेरी आत्मा सुनहरी हो गई ।
गुरू को कीजे बंदगी जिसने अमृत पिलाया।
पशु को मानुष मानुष को देवता बनाया।।
उस गुरू के कदमो पे मैं बार बार नमन करता हूँ जिसने परमेश्वर के प्रेम का प्याला मुझे पिलाया और मुझे फरिश्ता बना दिया ।
गुरू के सेवक का आरता करते हैं यमराज
गुरू के सेवक पे बलहारी तीन लोक का राज।।
गुरू के सेवक को देवता कंधो पर बैठाते हैं गुरूमुख का आरता खुद धरमराज अपने यहां करते हैं तीन लोक उस पर बलिहार जाते हैं ।
सतगुरू मेरी झोलियां मेहेर के फूलों से भरदे।
प्रभ के रस्ते से हटूं नहीं मेरे सिरपे हाथ धर दे।।
मेरे सच्चे सतगुरू मेरा दामन फूलों से भरदे मैं सच के रस्ते से ना हटूं चाहे लाख मुसीबत आवें चाहे सिर कट जावे गुरू के बचन पर मैं अटल रहूँ ऐसा मुझे आसीस दे ।
फुलसन्दे वाले बाबा कहें
जो तू बचन गुरू का माने।
सारी दुनियां तुझे सिर पे बैठावे
अपना सरताज़ माने।।
सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वाले कहते हैं अगर तू गुरू की भगती करे गुरू के कहने में चले तो तू जमीन आसमान पर राज करेगा, सारी दुनियां तुझे कंधों पर बैठावेगी, तू सबके सिर का ताज बन जावेगा, इसमें कुछ भी शक नहीं ।

नयन तरसे गुरू दरसन को मन में दरस की चाह। सिमरो संत सुहागनी सच्चा साजन शाह॥
सिमरो संतो रस भरी रितु सुहानी आई। गुरू चरणों के जल में मेरी रूह नहाके आई॥
गुरू से मुख ना मोड़ये चाहे छुट जावे संसार। मुश्किल से सतगुरू मिले पार लगावनहार॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहें मैं कपड़ा तू मेरा रंग। पारब्रह्म परमेश्वर साजन मुझे लेले अपने संग॥

कितने मौसम।

ज़िन्दगी जब भी तुझे
याद करती है सनम
मेरे करीब से गुज़रते हैं
जाने कितने मौसम ।

एक हवा का झोका कुछ
गुनगुना के चला गया
वो ख़्वाब था या साया था
या तू ही था ओ गुलबदन ।

चाँद दरिया में कहीं
डूबा रहा रात भर
तेरे बिना ना चैन मिला
ना सकून मिला कहीं जानेमन ।

टुकड़ा टुकड़ा मेरे जिसम का
याद करता रहा बस तुझे
ज़मी से आसमा और उससे
भी आगे गये मेरे कदम ।

किसको मिलती है जहां में
ज़िन्दगी भर की खुशी
तेरी भी है आँख नम
मेरी भी है आँख नम ।

रंज़ो ग़म दुनियां भर के
डालदो मेरे दामन में
और नहीं तो ये ही एक खुशी
मिल जावे हमें कम से कम ।

मेरे दिल की दीवारों पर
लिखती रही मेरी रूह कुछ
ये और बात के मेरे घर
ना सियाही थी ना था कलम ।

सोते हुए मेरे हाथ में
कोई एक कमल रख गया
ना जाने वो ख़याल था
सच था या के था वहम ।

जब भी देखता हूँ मैं
मेरे हमनशीं तू मेरे साथ है
हर कदम पे है मेरे
संग संग तेरा चश्मे करम ।

तेरे ख़याल को हम
जाने कबसे ओढ़े बैठे हैं
सच कहते हैं बाबा फुलसन्दे वाले
खाके अ रब तेरी कसम ।

घर सूना मेरा पड़ा प्रभ साजन देख तेरे बगैर। पारब्रह्म प्रभ साजना सूखी नदी मैं तेरे बगैर॥
मेरे घर में अंधयारा तेरे चिराग़ बगैर। कैसे करूँ तेरा दरस आँख में जोत बगैर॥
मेरी प्यास ना जावे सच्चे सजन तेरे बगैर। प्यास ना जावे धरती की बादल बरसे बगैर ॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते तुझसे जुड़ा मेरा तार। जुग जुग से मैं बंदा तेरा तू सच्चा करतार॥

हवा का चिराग़

सच के रास्तों पे कौन चलता है ?
सच के रास्तों पे रब मिलता है
हवा में चिराग़ कोई कोई जलता है
फूल कांटों के बीच खिलता है।
अंगारों पे कौन चलता है
हवा में चिराग़ कोई कोई जलता है।

सच के रास्ते पे परमेश्वर के रास्ते पे चलते हुए फ़रिश्तों के भी पर जलते हैं इन्सान की तो औकात क्या है ? सच के रास्तों पे चलके महबूबे हकीकी यानी प्रभप्रीतम का दरस मिलता है पर ये रास्ता बड़ा कठिन है फूल कांटों के बीच खिलता है सच का रास्ता अंगारों का रास्ता है उसपे चलते हुए लोगों के पैर जलते हैं और वे गिर पड़ते हैं और कितने ही बीच से पलटके कायरों की तरहा मैदान से भागे सिपाही की तरहा संसार में मुंह छुपाने की जगहा तलाश करते फिरते हैं कोई मर्देखुदा यानी ईश्वर का सच्चा बन्दा ही ये रास्ता तय करता है नामरद तो इधर आते ही नहीं।

सच कहते हैं लोग पुराने
कोई किसी का दर्द ना जाने
पराई आग में कौन जलता है
मरने वाले के संग कौन मरता है
हवा में चिराग़ कोई कोई जलता है।

पुराने लोगों ने सच ही कहा है संसार में उपकार करने वाले अपने हाथ का टुकड़ा दूसरे को देने वाले लोग बहुत कम हैं पराई आफत को कौन अपने सर पर लेता है कोई चिराग़ ऐसा होता है जो तेज हवा में भी जलता रहता है यानी कोई मर्द का बच्चा ऐसा निकलता है जो तमाम आफतें भोगता रहता है और परमात्मा के चराग को हवाओं से बचाता पहाड़ के शिखर तक जाता है आसमान उस पर फूल बरसाता है देवता उस पर गर्व करते हैं उसे प्रणाम करते हैं दुनियां के बुखार में तपने वालो की कमी नहीं वे तो रातदिन कामक्रोध की गर्मी में जलते रहते हैं और संसार में सड़ते रहते हैं तुम मुझसे ऐसे काने और दाग़दार फलों के बारे में बात ना करो।

जो रब का दरवाज़ा खटकाता
पर्दा उठाके वो सामने आता
दिल में शम्मा की तरहा वो जलता है
वो सच्चे लोगों से प्यार करता है
हवा में चिराग़ कोई कोई जलता है।

जो उस प्रभ के दरवाजे को खटकाता है अपने मस्तक के रौशन दरवाजे पे जाकर जो बार बार उस सच्चे महबूब को प्रभ पीतम को पुकारता है वह प्रभ परदा हटाके सामने आ जाता है, वो तो सच्चे लोगों से प्यार करता है और दिल में ही रहता है कहीं दूर उसका निवास नहीं ।

अपने दिल की हर कोई माने
सच्चे गुरू की कोई कोई माने
गुरू के पीछे जो चलता है
रब का नूर गुरू से मिलता है
हवा में चिराग़ कोई कोई जलता है।

हर कोई अपने मन यानी नफस के पीछे पागल है सच्चे गुरू की बात मानने वाले कोई नहीं गुरू के पीछे चलके ही परमेश्वर की रोशनी है ।

दुनियां और फ़कीरी दो सौकने हैं
आपस में इनकी कभी ना बने है
जो दुनियां का गधा बनता है

तेरी जुदाई में फिरूं तड़पती ना करूँ किसी से बात। सच्चे सजन परमात्मा तू कब थामे मेरा हाथ॥
तेरे दरस बिना अंधयारा सूना है जीवन मेरा। हंस उड़े तेरी तरफ जाने ना रस्ता तेरा॥
नाम जपूं तेरा रात दिन सच्चे साहिब सुल्तान। तू ही बसंत बहार मेरी मैं तुझपे कुरबान॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते मैं सुहागन तेरी। पारब्रह्म प्रभ खसम हमारे बात सुन जरा मेरी॥

नरक के भेड़यो के हाथ में पड़ता है
हवा में चिराग़ कोई कोई जलता है।

दुनियां और फ़कीरी एक दूसरे के विरीत दो सौकनो की तरहा हैं परमेश्वर की तरफ़ चलोगे तो दुनियां नाराज़ होगी दुनियां में धंसके चलोगे तो परमात्मा नाराज़ होगा अब सोचलो तुम किसको खुश करना चाहते हो ? जो दुनियां को सिर पर रखकर चलता है उसे नरक के भेड़ये अनेक रूप बनाकर फाड़ डालते हैं ।

करदे रहम ओ आसमान वाले
टूटे फूटे हम मट्टी के प्याले
वक्त जब करवट बदलता है
नसीब फटे चीथड़े सिलता है
हवा में चिराग़ कोई कोई जलता है।

ओ आसमान वाले रहम करदे हम मट्टी के टूटे फूटे प्याले हैं वक्त की गिरावट जब आती है आदमी भीक मांगने पर और फटे चीथड़े सिल सिल कर पहनने को लाचार हो जाता है ।

कोई जाहिल को लाख समझावे
मुश्क और मींगनी उसे इक नज़र आवे
अंधा जाके कुवे में गिरता है
कोई निकाले तो निकलता है
हवा में चिराग़ कोई कोई जलता है।

जाहिल गवांर लोगों से सिर मारना बेकार है उसके लिये बकरी की मींगनी और कस्तूरी की सुगन्ध बराबर हैं परमात्मा की तरफ से अंधा आदमी दुनियां के कुवे में गिरा पड़ा रहता है और तब तक नहीं निकलता जब तक सच्चे गुरू उस पर मेहेरबान ना होवें ।

अ हमनशीं तू है फूलों का मौसम
तेरी मुहब्बत फूलों का मौसम
तेरे दर्द में दिल जलता है
चाँद रात में जब निकलता है
हवा में चिराग़ कोई कोई जलता है।

अ मेरे प्रभप्रीतम तेरी याद फूलों का मौसम है तेरी मुहब्बत में मेरा दिल जलता है जब रात में चाँद निकलता है ।

वो कुवे पहाड़ों को मैदान करदे
गुलिस्तानो को वीरान करदे
उसके आगे किसका जोर चलता है
उसके टुकड़ों पे जहान पलता है
हवा में चिराग़ कोई कोई जलता है।

वो बड़े छोटों को बराबर कर देता है उसके आगे सबके हाथ फैले हैं मेरे भी ।

मत दूसरों पे तोहमत लगाना
अपने नफस से खुद को बचाना
आदमी गलती खुद करता है
औरों पे इल्जाम धरता है ।
कड़वी बात मत मुंह से कहना
अपना बनाके दगा मत देना
रब सबका हिसाब करता है
दूध का दूध पानी का पानी करता है ।

अ मेरे महबूब इतना करम करदे
मेरे कटोरे में रोशनी भरदे
दामन सबके तू भरता है
मायूस तू कब करता है।
सच्चा इश्क मुश्किल से मिलता
दिल टूटे तो रब का घर हिलता
फटे दिल को वो ही सिलता है
उसकी याद में सकून मिलता है।

फुलसन्दे वाले बाबा कहते सबके कागज़ उसके हाथ में रहते जैसा चाहे वो करता है गदा को शाह शाह को गदा करता है
हवा में चिराग़ कोई कोई जलता है

आसमान में बादल आये मोर बन में नाचे। मैं नाचूं तेरी याद में प्रभ प्रीतम मेरे साँचे ॥
भाग से सतगुरू मिले तो वो प्रभ भी मिलेगा। मन के सरोवर में एक दिन सुनहरा कमल खिलेगा ॥
तेरे बिना मेरा घर सूना पड़ा अ मेरे सरताज। रोज तेरा रस्ता देखूं राजो के महाराज ॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते फूल खिले हैं बन में। तेरे बिना बहार नहीं आई मेरे चमन में ॥

अ मेरी आँख

एक आँख सिर्फ मट्टी को देखती है।
एक आँख तेरी रोशनी को देखती है।
एक आँख वो है जो तुझे देखती है।
अ मेरी आँख तू किसे देखती है।
दुनियाँ देखती है या रब को देखती है।

मूरख आदमी दुनियां को सिर्फ मट्टी समझता है और जानने वाले इस मट्टी में से हीरे जवाहरात सोना चाँदी निकाल लेते हैं, मूरख आदमी इस इन्सानी जिस्म को सिर्फ मट्टी समझता है, पर परमात्मा के चाहने वाले इसमें सदा उस के नूर को उसकी रोशनी को देखते रहते हैं, इससे भी आगे देखने वाला सिर्फ उस परमेश्वर को ही सामने देखता है, सब हरकतें उसी की, सारे जलवे उसी के हैं वो ऐसा सोचता है । तू बता अ मेरी आँख अ मेरी अकल तू कहाँ तक देख रही है फकत दुनियां को देख रही है या हर लम्हा उस सिरजनहार को देखती है तू कहाँ पर ठहरी है ?

माथे के महराब में चिराग़ जलाऊँ तेरा
खूबसूरत प्रभ साजण मुखड़ा देखूं तेरा।

माथे के गुम्बद में उस अविनाशी परमात्मा का चिराग सदा से जलता है उस चिराग़ की रोशनी में अ सच्चे सुल्तान मैं हर वक्त तेरे मुख को देखता रहता हूँ मेरा दिल नहीं भरता ।

आदम को मट्टी समझा तो शैतान बिदक गया
जिसने देखा नूर को वो ही फ़रिश्ता झुक गया।

परमात्मा ने आदम को जब बनाया तो फ़रिश्तों से कहा मट्टी लाओ पानी लाओ मेरी सूरत का एक बुत बनाओ फिर परमात्मा ने उस बुत में अपने मुंह से फूंक मारकर उसे जिन्दा किया यानी अपनी ही सांस उसे बक्शी और फ़रिश्तों से कहा इसे सजदे करो सबने बात मानली पर इब्लीस नाम का फरिश्ता जो सरदार था उसे अपना अपमान महसूस हुआ वो ना झुका कहा ये तो हमारे ही हाथ की मट्टी है मैं इसे सजदा ना करूंगा मैं इससे श्रेष्ठ हूं वो ना माना और आज्ञा ना मानने से वो शैतान कहलाया और परमात्मा का विरोधी बन गया परमात्मा ने उसे अभिशाप दिया और शैतान ने कहा जो लोग तेरा नाम लेंगे मैं उनको भटकाऊँगा दुख दूंगा परमात्मा ने कहा जो मेरे सच्चे दोस्त हैं वे तेरे बहकावे में ना आवेंगे जा अ बेशरम तू कुछ भी करले ?

कान अपने बंद कर सुन रब की आवाज को
जुबान अपनी बंद कर सुन रूह के साज को।

अपने कानो को दुनियां की तरफ से बन्द कर और अपने रब की आवाज को सुन खामोश रह खामोशी सौ खुशबुओं की तरहा है, बोलना नहर जैसा और चुप रहना सागर जैसा है, चुप रहकर आत्माओं के साज को सुन जो आसमानो में रात दिन उस परमात्मा के गीतों को गाती फिर रही हैं

इतना प्यासा बनजा जो साकी खुद पिलाये
आसमान का झरना धरती पे उतर आये ॥

दुनियां की वासनाओं की प्यास को अपने ऊपर से उतार कर फेंक दे, ये मन ये नफस तुझे नरक में ले जावेगा उस परमात्मा की रोशनी को उसके इशक के जाम को पीने वाला बन जिससे

मेरे होठों पे रात दिन बस एक तेरी बात। सबसे कहूं तेरी बातें क्या दिन और क्या रात॥
तेरा प्यार मेरे दिल में होठों पे तेरी कहानी। तू मेरे दिल का नूर है तू मेरी ज़िन्दगानी॥
तेरा नाम जुबां पे हर दम मैं तेरे कानो से सुनता। तेरी आँखों से देखता तेरे पैरों से चलता॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते मेरा गुरू हकीम। दुनियां मांगे मीठी दवा गुरू देवे कड़वा नीम॥

परमात्मा तेरे लिये आसमान से अपने दिव्य अमृत को साकी यानी पूरे गुरू के हाथ यानी अपने किसी दोस्त के जरिये जमीन पर तुझ तक भेजे और तेरी रूह प्यासी ना रहे ।

उसके हाथों को चूमा तो
मेरा चेहरा चाँद सा हो गया
उसकी तरफ मैने देखा तो होश मेरा खो गया।

गुरू के हाथों को मैने चूमा तो मेरा मुख उसके प्रकाशित हाथों के स्पर्श से चाँद जैसा नूरानी हो गया उसकी तरफ देखते ही मेरे दुनयावी होश हवास गायब हो गये ।

बहरे के आगे सारंगी बजाने से क्या होगा
जाहिलों को जन्नत की बात सुनाने से क्या होगा।

जाहिलों और दुनियांदारों से ईश्वर की बातें करना बेकार है वे ना सुनते हैं ना मानते हैं बहरे को क्या पता कि सारंगी बजाने वाला राग भैरवी बजा रहा है या राग मारवा बजा रहा है ?

जो नहीं है उसको भी अकल की आँख देखती।
अंधी आँख चाँद को भी नहीं देखती।

अकलमन्द आदमी आने वाले बीस साल में जो होगा उन बातों को आज ही देख लेता है अनुमान लगा लेता है और बेवकूफ आदमी अपने सामने के हालात भी नहीं जान पाता ।

उस सुल्तान की खुशबु फरिश्ते ही पहचानते।
नरक में रहने वाले बदबू के सिवा कुछ नहीं जानते

उस परमेश्वर के नाम में उसकी भगती और प्यार में क्या लज्जत है पवित्र हिरदै वाले लोग ही जानते हैं और जो दुनियां के गधे हैं वे वासनाओं की घास खाकर मोटे हो रहे हैं ताकी नरक के गुस्सैल खूनी भेड़ये अपनी अच्छी खुराक उनको खाकर पावें और खुश होवें।

मछली सागर में रहे बाहर आके तड़पे है।
पंछी परंद सागर में गिर जावे तो तड़पे है।

सच्ची आत्मा वाले रात दिन उस मालिक के जिकर रूपी सागर में तैरते हैं और जाहिल उसमें आकर बेचैन होते हैं, सागर मछली का घर है पर परन्द पानी में गिर जावे तो उसकी मौत है,एक आदमी सतसंग में जा बैठा और बैठा रह गया, दूसरा बाहर खड़ा है कहता है उठजा उठजा क्या जमीन ने तुझे पकड़ लिया ? वह बोला जो तुझे भीतर आने से रोक रहा है वो ही मुझे बाहर जाने को रोक रहा है बता मैं क्या करूं मेरा दिल ही नहीं होता कि उठ कर बाहर आऊं

आदमी जैसा सोचता वैसा ही बन जाता है
जैसा बोता बीज यहां ठीक वैसा ही पाता है।

जैसा तुम ज्यादातर सोचते हो एक दिन वैसे ही बन जाते हो विचार ही हमें बनाते बिगाड़ते हैं ऐसा नहीं कि कोई बाजरा बोवे और गेहूं उगे ।

एक अकल है हैवानी एक अकल है इन्सानी
एक अकल है फ़रिश्तों की एक अकल है रहमानी

एक आदमी जानवर जैसा है एक देवता जैसा है ये अपनी अकल की वजहा से है, एक आदमी कतई बेवकूफ है एक होशियार समझदार और ऐसा है कि सब उसे चाहते हैं, ये सब अकल की ही वजहा से ऐसा है ।

फुलसन्दे वाले बाबा कहें मेरे दिल में तू ही है
मेरी मंजिल मेरी चाहत मेरी राहत तू ही है।

अ मेरे सच्चे बादशाह, मेरे परमात्मा, मेरे दिल में तेरे सिवा कुछ नहीं, तू ही मेरी दुनियां है, तू ही मेरा चैन सकून और आंखों की ठण्डक और मेरी आँखों की रोशनी है, तुझपे मैं कुरबान हूँ, मेरा दिलो जान मेरी दुनियां तुझपे कुरबान है।

गुरूमुख तो हंस बना निस दिन मोती चुगता। मनमुख काग दुनियां का दुनियां की गन्द में उड़ता॥
सतगुरू ज्ञान सरोवर हैं सतगुरू हीरे मोती। सतगुरू सत की आत्मा सतगुरू सत की ज्योति॥
दिल में सतगुरू की सूरत हाथों से कर उपकार। सांस सांस कर बंदगी मिलेंगे सिरजनहार॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहें रब से जुड़ा मेरा तार। सतगुरू हैं रब का साया हैं रब का उजियार॥

ये ज़िन्दगी

तूफ़ानो से बियाबानो से
गुज़रती है ज़िन्दगी ।
तेरा संग हो तो
फूलों पे भी चलती है ज़िन्दगी ।।

दिल को सकून
रूह को मिलता है चैन सा
किसी दिन तेरे संग
जब गुज़रती है ज़िन्दगी ।।

अपने ही तो हैं सब
जो उजाड़ते हैं मेरा गुलशन
उस उजड़े चमन में तुझको
ढूंडे है ज़िन्दगी ।।

ढूंडता हूँ आग को मैं
अपनी ही राख में ।
किस किस के आगे हाथ तू
फैलाती है ज़िन्दगी ।।

मुझपे छाया है तू दिलबर
रोशनी सी बनकर ।
मत देख ग़ैर को
आँख बन्द करले ज़िन्दगी ।।

मेरा इशक तन्हा नहीं
रब तो मेरे साथ है
अ रब तुझे महबूब बनाके
माँगे है ज़िन्दगी ।।

ना मुझे पता है रास्ता
ना पता मुझे मेरी मंज़िल ।
वरना कौनसा गीत नहीं
तेरी ज़ुबां पे ज़िन्दगी ।।

कहाँ तक तुझे बुलाऊँ
तू ख़ुद ही आया कर ।
तेरा रास्ता देखते देखते
थक गई है ज़िन्दगी ।।

चिराग़ आसमानी जलता है
उस वक़्त मेरी आँखों में
जब गीत मुहब्बत का
गुनगुनाती है ज़िन्दगी ।।

फुलसन्दे वाले बाबा
सच मानो मेरी बात ।
रस्ते में तेरे फूल
बिछाती है ज़िन्दगी ।।

बादलों को देखके जैसे बन में मोर नाचे। सतगुरू तू अमृत बादल मेरा मन मयूरा नाचे॥
बादलों से चाँद निकला गावे मन चकोर। सतगुरू तेरा चाँदना दीखे मुझे हर ओर॥
जैसे सूरज निकला गगन में फैली गई है धूप। मेरी आत्मा सुनहरी हो गई देखके तेरा रूप॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते मेरे सतगुरू सुल्तान। तेरे चरणों में मेरी आत्मा को मिला विसराम॥

सुबहा का तारा

अ दिल में रहने वाले कभी सामने भी आ
सुबहा का तारा हूं मैं अ सूरज सीने से लगजा।

कूज़ा ए आं तन पुर अज़ आबेहयात।
कूज़ाए ईं तन पुरअज़ ज़हरे ममात॥
मेरे तन का प्याला अमृत से है भरा हुआ ।
जिस्म का प्याला मौत के ज़हर से भरा हुआ ।।

मैं तुझे नहीं देखता क्योंकि तू है चेहरा मेरा
प्याला मुझे अता करदे देख मैं हूं प्यासा तेरा ।

मीर दूबे रुवी पोश अैं आफ़ताब।
फ़र्ते नूरे औसत रुवेश रा नकाब॥
वो गगन का सूरज वो बेनकाब है ।
उसकी बेहद रोशनी ही उसका नकाब है।।

मी ना दानम के तू माही या वसन।
मी ना दानम चह मी ख़्वाही ज़मन॥
तू चाँद है या बुत है मैं नहीं जानता ।
मुझसे तू चाहता है क्या मैं नहीं जानता ।।
मन निदानम ता च ख़िदमत आरमत।
तन ज़नम यादे रबारत आरमत॥
मैं नहीं जानता तेरी क्या ख़िदमत करूं ।
तेरा बयां करूं या ख़मोश ही रहूं ।।

ई अजब ने नेस्ती अज़ मन जुदा।
मन निदानम मन कज़ायम तू कज़ा॥
तू मुझसे जुदा नहीं फिर भी मैं नहीं जानता ।
तू कहाँ है मैं कहाँ नहीं जानता ।।

मी निदानम के मरा चूं मी कशी।
गाहे दर बगाहे दर खूं मयकुशी॥
तू क्यों खींचता अपनी तरफ मुझको पता नहीं ।
कभी बगल में कभी जुदाई में क्यों डाले पतानहीं

आफ़ताबे गुम्बदे अज़रक्सूद।
किश्तिये हुश चूं के मुशतग़रक सूद॥
होश की कश्ती डूब गई तारा फ़ना हुआ ।
देखा तो सूरज बनके आसमा में जा उगा ।।
सुबहा के तारे ने जान देदी और सूरज बन गया
कतरे ने अपनी जान देदी और समन्दर बन गया

बे हिज़ाबत बायद आं अज़ू लबाब।
मर्ग रा बगज़ीं वो बर दरां हिज़ाब॥
अगर तू उसे बेपर्दा सामने चाहता ।
पर्दा फाड़के मौत का सामने चला जा ।।

मी रूद चूं ज़िन्दगां बर ख़ाकदां।
मुर्दा वो जानश शुद बर बर आसमा॥
ज़िन्दों की तरहा जो ज़मी पर चल रहा है ।
उसकी रूह का साया आसमा पे खड़ा है ।।

हर के ज़ेबातर बूद रशकस फ़ज़ूं।
जां के रश्क अज़नाज़ ख़ेज़द दया बनूं॥
जो जितना हसीन है उतना ग़ैरतमन्द है ।
जो जितना रौशन है उतना वो रब को पसन्द है।

जहाँ भी जाओ परमेश्वर का जिक्र करते रहना। जहाँ रहो सच्चाई से ज़िन्दगी बसर करते रहना॥
जहाँ भी जाओ नेकी की करना सच्ची कमाई। नेकी का रास्ता ही प्रभ का रास्ता है भाई॥
बुरो को देखके कभी मत बुरे रस्तो पे जाना। गुरू की बात मानना जग की बातो पे मत कान लगाना॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते गुरु का दामन थाम। मिलेंगे एक दिन सच्चे सजन पारब्रह्म भगवान॥

सालहा ई मर्ग तबलक मी जुनद।
गोशे तू बेगहा जुम्बिशे मी कुनद॥
बरसों से मौत कान पे ढप बजाती है ।
बे बखत चौंकेगा अभी नींद आती है ।।
प्याले का पानी मत बन जो बदबूदार हो जाये
दरया की तरहा बह हर कोई तुझे पाये ।।

हर करा ख़्वाही तू दर काबा ए बजू।
ता बरीद दर ज़मा पेशे तू ऊद॥
जिसको तू चाहता है काबा दिल में तलाश कर
वो तो है तेरे सामने अपना पर्दा चाक कर ।।

मत उनका ज़िकर करो
जिन्होंने गुलशन उजाड़ दिया।
उनका ज़िकर करो जिन्होंने
सूरज पे झण्डा गाढ़ दिया॥

अच्छे बुरों को परमेश्वर
अलग अलग छांटेगा
अच्छों को प्यार बुरों को फटकार
फूल कांटे बांटेगा ।

वक्त का लिखने वाला
जब कलम उठायेगा
एक एक की बात लिखेगा
पढ़के सुनायेगा ।।

चमन में कव्वा
कव्वों के नारे लगाता है ।
पर इससे बुलबुल का गाना
कब रूक पाता है ।।

कुत्तों का शोर सुनके कभी
काफ़ले रूकते नहीं।
चाँद तारे अपनी गर्दिश
बन्द कभी करते नहीं ।।

उनका ज़िकर करो जिनसे
जग में उजियार है ।
उनका ज़िकर छोड़ो जिन्हें
दुनियां का बुख़ार है ।।

मत उनका ज़िकर करो
जिनको सुनके बेचैन होवे दिल ।
उनका ज़िकर करो
जिनसे चैन पावे दिल ।।

रब के चाहने वाले
उसके हाथ से प्याला पीवेंगे ।
मनमुख दुनियां के संग
फटे चीथड़े सीवेंगे ।।

मी सतानद ई नजस जिस्मे फ़ना।
मी दहद मुल्के बरू अज़्दह मे मा॥
वो मेरे नापाक जिस्म को जब लेलेता है ।
ख़यालो ख़्वाब से ऊँची सल्तनत दे देता है ।।

मी सतानद कतरा ए चन्दे अश्क।
मी दहद कौसर के आरद कन्द रश्क॥
आँसुवों के चन्द कतरे वो मेरे जब ले लेता ।
रूवर्ग का अमृत बदले में मुझको वो देदेता ।।

धुवें से भरी मेरी आहों के बदले वो मोती मुझे देता
फुलसन्दे वाले बाबा कहें वो मेरा रब है ऐसा ।।

मन में प्रभ का सिमरन करो हाथ पांव से सेवा करो। नर को नारायण जानो दिल में सच की जोत धरो॥
करो संभल कर काम गुरू चरणों में ध्यान धरो। जिससे खुश होवे परमेश्वर जग में ऐसे काम करो॥
हंस जैसी रहे आत्मा सच के मोती चुगती रहे। जग के कीचड़ में ना फंसे प्रभ की तरफ उड़ती रहे॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते गुरू को सब कुछ मान। गुरू के चरणों में अपने जीवन को कर दान॥

अचरज भरी बातें

सतपुरूष बाबा फुलसन्दे वाले उस दिव्य परमेश्वर की अचरज भरी बातों का ज़िक्र करते हुए कहते हैं– ओह आइने में जो चमक आई वो तुम्हारे चेहरे की चमक की वजहा से आई है, किसी ने आज तक आइने को तुम्हारे चेहरे के बिना नहीं देखा,नहीं नहीं ये सिर्फ तुम्हारी खूबसूरती की वजहा से है के हर आइने में तुम खुद ही दिखाई देते हो तुम्हारा चेहरा नहीं । ओ तुम वो के जिसके पवित्र साम्राज्य में किसी का डींग मारने के लिये कोई स्थान नहीं है इस दुनियां का जो वजूद है वो सिर्फ तुम्हारी वजहा से है,मगर फिर भी किसी को ना तुम्हारा निशान पता है और ना घर का पता कि किस पते पर तुमको कोई लिखे ? तुम और मैं अलग नहीं हैं लेकिन मैं हालांकि तुम्हें मेरी जरूरत नहीं है पर मेरी ज़िन्दगी को सच तुम्हारी बहुत जरूरत है,तुम्हारी मेहरबानियों को रात दिन मेरी आत्मा कोहरे भरे भोर में और दोपहर में और शाम यानी हर सांस पर पुकारती है, ओ मेरे दिल कब तक तुम ढूंडते रहोगे आत्मा की पूरणता को स्कूलो में और पुस्तकालय की किताबो में, कब तक तुम कोशिश करते रहोगे उस तत्वज्ञान को या प्रकृति के नियमो को ढूंडने की ? क्योंकि वो ज्ञान तुमको तब तक न प्राप्त होगा जब तक तुम्हारे हाथ गुरू के चरणों का स्पर्श ना पा लेंगे और जब तक तुम्हारा माथा गुरू के पैरों की धूल से रगड़ रगड़ कर शीशे जैसा साफ निर्मल और चकमदार ना हो जावेगा ? हर वो विचार जिसमें ईश्वर की याद नहीं है एक बुरी प्रेरणा है सो तुम पवित्र बनो सदाचारी बनो उस नदी के निकट पहुंचने के पहले जिसको संसार में ईश्वर कहा जाता है । जो रोज चोरी करे उसे पहले ही चोरी छोड़ देनी चाहिये समझदारी के साथ कि इससे पहले उस प्रभ प्रीतम का गुस्सा उसके लिये काबू से बाहर हो जावे । कब तक ये बुरे विचार तुम्हारे दरवाजे पर रोज धूल उड़ाते रहेंगे ? मेरी मानो इनको बेवकूफों के लिये छोड़ दो । हम उम्र भर प्रेम के रास्तों पर दौड़ते रहे हमने पूरी इच्छाशक्ति के साथ उसके साथ एकाकार होने का समय और तरीका ढूंडा उम्र भर, उसकी एक झलक पाने के लिये हमने बहुत कोशिशें कीं क्योंकि उसकी एक झलक बेहतर है हमारी आंखों और रूह के लिये सिवा इसके कि हम दुनियां की सुन्दरता को देखते रहें।

सतगुरू की सुन्दर सूरत पे बरसे प्रभ का नूर। मैं उस सूरत पे कुरबान उस नशे में चूर॥
सतगुरू ने खोल दिये रोशनी के किवाड़। मुझसे अलग कर दिये जगत के सब झाड़॥
सतगुरू पे बलिहार अपने दिया ब्रह्मपरकास। मट्टी में हुई रोशनी हुआ दुखों का नास॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते हुकम गुरू का मान। जग में सच्चे काम कर कर ना ओछे काम॥

प्रीतम की छुपी हुई कोई निशानी

तू मेरे आसमानी प्रीतम की छुपी हुई कोई निशानी है, ओ मेरी आत्मा की आरामगाह ! ओ मेरे सतगुरू ! जिसे केवल मेरी ही आँखें देख सकती हैं दुनियां की आंखों से तेरा पर्दा है, वे तुझको नहीं देख सकते, क्योंकि उनका प्यार तुझ रब से नहीं तेरे इस कठोर छिलके से यानी इस कठोर संसार से है । हर वो आकर्षित वस्तु जो इन्सान की आँख के सामने आपना चेहरा लेकर आती है मंज़िल जल्दी ही उसे उसकी आँखों से छीन लेगी यानी मौत की धुंद में उसे फिर ना देखा जा सकेगा, अतः जाओ और जाकर अपना दिल किसी ऐसे को दो जो सबमें है और जिसका वजूद हर जगहा है जो हमेशा से तुम्हारे साथ था और आगे भी हमेशा तुम्हारे साथ ही रहेगा । ओ अपने आप को होशियार समझने वाले इन्सान ! ये जो तेरी औलाद तेरी दौलत जायदाद है ये तुम भी जानते हो कि कुछ समय बाद तुम्हें इन सबको छोड़ना पड़ेगा, खुश वो रहेगा जो अपने दिल को उस प्रभप्रीतम के दिल से जोड़ेगा, जो अपने दिल और आत्मा को उसके दिल के संगीत से जोड़ेगा,ओ मेरे दिल जाके उन मदहोश आसमानी मदिरा पीने वाले पियक्कड़ों की महफिल में शामिल होजा जिससे कि वे तुझे भी एक घूंट पिला सकें परम अमरतत्व की, आओ और दांव पे रखदो अपने दोनो जहान इस जुए के खेल में, यहां पे अपना सब कुछ लुटा देना ही इस खेल का पहला कदम है, अगर तुम ढूंड रहे हो अविनाशी जीवन को, तो पहले तुम्हें अपने आप को अपने वजूद को और खुदी को मिटाना होगा, क्योंकि तुमको तब तक राह नहीं मिलेगी जब तक तुम अपनी खुदी को नहीं मिटाओगे, तुम शाहीबाज हो जिसने उड़ान ली है उस आसमानी सच्चे बादशाह के हाथों से,तुम किसी से प्यार मत करना कभी तुम उलझ जाओ संसार के कांटों भरे जंगलो में और क्योंकि तुम्हारे प्रेम में वो बादशाह अपने महल के दरवाजे पर खड़ा तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है और तुम्हें वापस उसी के पास लौटना है, अगर तुम अपने आप को इन्सान के बुरे पहलुओं से छुड़ाने में कामयाब हो जाओ तो तुम उठ सकोगे बुराई की गहरी खाई से और बेशक चढ़ सकोगे सबसे ऊँचे शिखर पर जहां से ईश्वर के प्रकाश महल की सीढ़ियां प्रारम्भ होती हैं ,और जहां तुमसे पहले कितने ही उसके दोस्त पहुँच चुके हैं।

**जो माया को देखके हो गये बेईमान। ना वे गुरूमुख ना वे भगत ना सच्चे इन्सान॥
जो माया को देखके हो गये गुरू से दूर। वे सच मानो सच की राह से जा गिरे बड़ी दूर॥
जो माया के पीछे कुत्ते बनकर यहां वहां भागे। उन्हें ना कहिये आदमी वे मानुष हैं अभागे॥
फुलसन्दे वाले बाबा कहते उनको है धिक्कार। माया के पीछे हो गये मनमुख तजी शरम हुए ख्वार॥**

इशक के घोड़े पर सवार

इशक के घोड़े पर सवार होके मैने यानी मेरी रूह ने तुम्हारी तरफ को हजारों मील का सफ़र तय किया है, अब तुम हिचकिचओ मत ज़रा एक कदम मेरी तरफ को तो चलके आओ ओ मेरे हकीकी महबूब ओ मेरे प्रभप्रीतम ! अ मेरी रूह ! कब तक तू ढूंडेगी उस अपने प्रीतम को दरवाजे से दरवाजे ? अपने भीतर देखो कि जहां उसकी हजारों रोशनियां एक साथ चमकती है और उसके हजारों नाम जहां तुम्हारे भीतर की दीवारों पर लिखे हैं । अपने आपको एक मट्टी के जिसम की तरहा से मत देखो तुम अपने आपको एक आसमानी आइने की तरहा से देखो जिसमें से उस कुदरत की खूबसूरती झलकती है, मुद्दत से थमे हुए इशक के बादलों ने पैदा करदी है एक बहुत कड़ाकेदार बिजलियों के बीच गड़गड़ाती एक बहुत तेज बारिश,तुम हैरत में मत पड़ो अगर उस बारिश की वजहा से मट्टी में फूल खिलने शुरू हो जावें,तुम अपने वजूद का पर्दा उतारदो तब तुम देख पाओगे कि कितने राज कितनी सुन्दरता कितनी दिव्यता और हैरत की एक दुनियां तुम पर खुलती है जैसे तुम रोशनी के बादल के बीच आके खड़े हो गये हो । जैसे पत्थरों को घिस घिस कर चिकना चमकीला किया जाता है ठीक वैसे ही इशक की सैकल यानी घिसाई से अपने दिल को इतना चमकीला करलो कि उस चमक में सूरज छुप जावे और तब तुम देखोगे तुम्हारी आत्मा से उस महबूब की खूबसूरती कैसे छलक कर तुम्हारी आँखों से आकर टकराती है । कोशिश करो अपनी आंखों से धूल को हटाने की जिससे तुम देख सकोगे ईश्वर की वो रोशनी जो इन्सान की मदद करती है उसे अंधकार के हाथों से छुड़ाने में बुराईयों और पाप के पिशाचों के हाथों से छुड़ाने में । अगर तुम इसी तीव्र इच्छा से उस आन्तरिक ज्योति के रहस्यों को ढूंडते रहोगे तो मैं तुम्हें बचन देता हूं कि रोशनी के उस सागर के किनारे ले जाऊँगा जहां आन्तरिक खूबसूरती में नाचते हैं दरवेश और सच्चे फ़कीर उस महबूब की याद में धरती पर और सातों आसमानो में और मैं वादा करता हूँ कि मैं तुम्हारी मदद करूंगा कि तुम्हरी रूह मट्टी में दबे बीज की तरहा उस प्रभु के साम्राज्य में एक प्रकाश का अंकुर बनके जीवित हो उठे और तुम उस अविनाशी पुरातन पुरूष के संग अपने खोये हुए दिनों को पा सको ।

जिसने ये संसार बनाया उसकी कोई तस्वीर नहीं। रंग नहीं उसका उसका प्रारम्भ आखीर नहीं।
सबसे ऊपर सबसे ऊंचा सृष्टि से पहले कायम। इस दुनियां के बनने से पहले बनाने वाला कायम।
आके समाया खुद इन्सान में जान ना पाया कोय। वो ही जाने पूरा सतगुरू जिसका रहबर होय।
फुलसन्दे वाले बाबा कहें उसकी चाबी गुरू के हाथ। वो ही पावे उस प्रभ को जो पकड़े गुरू का हाथ।

यह संसार कुछ भी नहीं

अनेकों आश्चर्य वाला यह संसार कुछ भी नहीं है, अर्थात मिथ्या है ऐसा जो निश्चय पूर्वक जानता है वह वासनारहित, बोद्धस्वरूप पुरूष इस प्रकार शांति को प्राप्त है मानो कुछ भी नहीं है। राजा जनक आत्मज्ञान के बाद हुई अनुभूतियों का वर्णन अष्टावक्र जी के सामने करते हुए कहते हैं—पहले मैं शारीरिक कर्मों का न सहारने वाला हुआ फिर वाणी के विस्त्रित कर्म का न सहारने वाला हुआ। इसलिए मैं स्थित हूं। शब्द आदि ऐन्द्रिक विषय के प्रति राग के अभाव से और आत्मा की अदृश्यता से प्राप्त विक्षेपों से जिसका मन मुक्त होकर एकाग्र हो गया ऐसा ही मैं स्थित हूं। अभ्यास आदि के कारण विक्षेप होने पर ही व्याधि उपाधि का व्यवहार होता है ऐसे नियम को देखकर मैं उपाधि रहित हूं अर्थात स्थित हूं। उपयोगी अन उपयोगी से दूर, हर्ष और विषाद से परे आज मैं हे ब्राह्मण ! जैसा हूं वैसी ही स्थिति को स्वीकार करके स्थित हूं। आश्रम है अनाश्रम है ध्यान है और चित्त का स्वीकार और वर्जन है उन सबसे उत्पन्न हुए अपने विकल्प को देखकर मैं उन तीनो से मुक्त हुआ स्थित हूं। जैसे कर्म का अनुष्ठान अज्ञान से है वैसे ही उसके त्याग का अनुष्ठान भी अज्ञान से है, इस तत्व को भली भांति जानकर मैं कर्म अकर्म से मुक्त हुआ अपने में स्थित हूं ब्रह्म का चिन्तन करते हुए भी वह पुरूष चिन्ता को भी भजता है। इसलिए उस भाव को त्याग कर मैं भावना मुक्त हुआ स्थित हूं। जिसने साधनों से क्रिया रहित स्वरूप अर्जित किया है वह पुरूष कृतज्ञ है, नहीं है कुछ भी ऐसी भावना से पैदा हुआ जो स्वास्थ्य है वह कोपीन को धारण करने पर भी दुर्लभ है। इसलिए त्याग और ग्रहण दोनों को छोड़कर मैं सुखपूर्वक स्थित हूं। कहीं तो शरीर का दुख है, कहीं वाणी का दुख, कहीं मन दुखी होता है। इसलिए तीनों को त्याग कर मैं पुरूषार्थ में स्थित हूं। कर्म कार्य भी वास्तव में आत्मकृत नहीं होता। ऐसा यथार्थ विचार करने से जब जो कुछ कर्म करने को आ पड़ता है उसे करके सुख पूर्वक स्थित हूं कर्म और निष्कर्म के बन्धन से संयुक्त भाव वाले इस शरीर में आसक्त जो योगी है मैं इस देह के संयोग वियोग से सर्वदा पृथक होने के कारण सुख पूर्वक स्थित हूं। जो ज्ञानी है वो ही सुखी है अज्ञानी को शान्ति कहाँ सुख कहाँ ?

दर शिकश्ते पाए बकशद हक परे। हम जुके रे चाह बक्शा यद दरे।।पाँव टूटने पर परमात्मा पंख बक्श देता है, कूए में कोई गिर पड़े तो वहाँ भी वो प्रभ बाहर निकलने का रास्ता या दरवाज़ा बना देता है **गुफत पैग़म्बर के चूं कूबे दरे। आकबत जां दर बुरू आयद सरे।** अगर तू दरवाज़ा खटखटाता रहेगा तो एक दिन वो कुलआलम का सुल्तान वो परमात्मा दरवाज़ा खोलके बेताब होके तेरे सामने बेपर्दा होके सरे आम तेरे सामने आके खड़ा हो जावेगा ।

अ बेसूरत

जिसम से निकल के जब देखता हूँ।
अ बेसूरत तुझे देखता हूँ।।

जब तक आदमी जिसम में पैबस्त रहता है वह नहीं जान पाता कि जिसम क्या है और आत्मा क्या है ? जब किसी दिन जीते जी आत्मा इस जिसम से अलग होती है वो उसके लिये लिये एक अचरज भरी मंज़िल होती है, उसका जीवन और उसके सोचने के तमाम पैमाने ही बदल जाते हैं, तब वो एक साधारण आदमी नहीं वरन परमेश्वर की तरफ से चुना हुआ व्यक्ति हो जाता है,

मेरी माटी में चिराग़ जले है।
ये कौन मेरे साथ साथ चले है।।

इस मट्टी के जिसम में ईश्वर का चिराग़ जलता है, पर कहना और देखना ये अलग अलग बाते हैं,बेशक परमेश्वर हमारे साथ चलता है पर कहना और जानना, ये अलग अलग बाते हैं ।

तू शिखर पे है या घाटी में।
खोजले इस तन की माटी में।।

तू आत्मा के प्रकाश में है या संसार के विचारों के अंधेरों में भटक रहा है इस तन की माटी में ही तू उस प्रभ को खोज ।

कूएयार में जो तू घर बनाले अपना।
मिलेगा जरूर तुझको मेहरबान अपना।।

अगर तू सतगुरू की गली में अपना ठिकाना करले, दिल दिमाग में गुरू की बातों को बसाले तो तुझे वो सच्चा प्रीतम परमात्मा भी अपनी रोशनी में तुझे स्वीकार कर लेगा ।

दरवाज़ा जो उसका खटखटावे।
कब तक वो पर्दे में रह पावे।।

जो आदमी उस प्रभ परमेश्वर का दरवाजा खटखटाता है वो अन्तरयामी परमात्मा कब तक भला अपने को परदे में रखेगा पर वो भी तुम्हारी सच्ची और कच्ची मुहब्बत को देखता है ।

इशक ने पंख जिसको दिये हैं।
वो आसमानो की तरफ उड़े हैं।।

जिसके हिरदै में परमेश्वर की दीवानगी है मुहब्बत और इशक है उस आत्मा के पंख निकल आते हैं और वो आसमानो की तरफ उड़ने लगता है वो हवाओं से और पवित्र आत्माओं से बात करने लगता है ,परमेश्वर उसे अपना दोस्त बना लेता है।

मट्टी खोदते रहो सोना निलेगा।
इन्हीं बादलों से चाँद निकलेगा।।

गुरू का हाथ छोड़के दुनियां को बनाया यार। उनका मुंह देखने से लगते पाप हजार।।
गुरू बचन जो माने नहीं उनसे ना करयो बात। उनके संग मत गिरयो जाके गहरे पाप।।
गुरू की जिसने मानी नहीं दर दर धक्के खाय। चरण गुरू के छोड़के दुनियां के पकडे़ पांव।।
फुलसन्दे वाले बाबा कहते मनमुख से रहो दूर। मनमुख संग उपजे दुर्बुद्धि खोवे आतम नूर।।

खान में काम करने वाले मट्टी पत्थर खोदते चले जाते हैं उनकी निगाह मट्टी पर नहीं उनकी निगाह सोने पर होती है चाहे कितनी ही मेहनत करनी पड़े चाहे कितना ही कबाड़ हटाना पड़े वे सोने के पीछे लगे रहते हैं और उसे हासिल करके ही दम लेते हैं ।

जिसके जो पास है वही बाँटेगा।
अच्छे बुरों को प्रभ छाँटेगा।।

किसी के प्रति शिकायत ना करो जिसकी आत्मा जैसी है वो वैसा ही इस संसार को देता है अच्छा या बुरा ।

सीप के भीतर सोता है मोती।
तुझमें सोई परमेश्वर की ज्योति।।

जैसे सीप के भीतर मोती सोया है ऐसे ही तुम्हारे भीतर परमेश्वर का नूर रखा हुआ है उस तरफ निगाह करने की जरूरत है।

धूप और चाँदनी से दुनियां भरी है।
तेरी रूह अंधे कुए में पड़ी है।।

प्रकाश तेरी आत्मा में है और तू संसार की अंधी वासनाओं के पीछे पागल है जागके होश में आ दुनियां की बुराइयों से और मुहब्बतों से जिस दिन तू आजाद हो जावेगा तेरी आत्मा रोके कहेगी के मैं हे ईश्वर ! तेरी ज्योति हूँ ।

कुए से गुरू निकाले रस्सा पकड़ले।
यानी के सच का दामन पकड़ले।।

गुरू संसार के अंध कूप से तुझे निकालने की कोशिश करते हैं पर तू सुनता ही नहीं तू उधर ध्यान ही नहीं देता, तू सच को पकड़, सच का रास्ता अख्तयार कर ।

पैर टूटे तो प्रभ पंख देता है।
कूवे में दरवाज़ा बना देता है।।

निराश ना हो पैर टूटने पर वो पंख देता है,

वो ही मंज़िल तक ले जाता।
तेरे रस्तो में गुलाब बिछाता।।

वो ही तुझे मंजिलों पर पहुंचाता है तेरी मुश्किलों को आसान करता है।

मत कह चमन को उजड़ते देखा।
बोल कितनो को प्रभ के घर में देखा।।

ये ना कह कि लोग प्रभ के रास्ते में उजड़ गये ये देख कि गुरू ने कितने दिलों को कितने उजड़े घरों को बसाया है ।

जाहिलों से बोलना बेफ़ायदा है।
कुत्तों को कस्तूरी बेफ़ायदा है।।

जाहिलों से साथ अकल ना खपा, कुत्तों के आगे कस्तूरी डालना या उसका बखान करना फजूल है और कतई बेकार है ।

फुलसन्दे वाले बाबा कहते।
हिम्मत वाले चोटी पे चढ़के रहते।।

सच्चेसतगुरू सतपुरख बाबाफुलसन्दे वाले बाबा कहते हैं उन हिम्मत वाले मर्दो को देख जो अपनी मंजिल पा चुके, भटके हुओं की बात करके परेशान ना हो ।

आश्रम के जरूरी नियम

आप इन्हें ध्यान से पढ़ये

1—कोई भी व्यक्ति जो आश्रम में आते हैं या आना चाहते हैं उनके लिए आवश्यक है कि वे बीड़ी, सिगरेट, शराब, सब दुर्व्यसनों का त्याग कर देवें, और अपनी आत्मा में ईश्वर के प्रकाश को बढ़ाने व साधना के उद्देश्य से ही आवें, तथा आश्रम के नियमों का पालन करें, वहाँ की शान्ति और व्यवस्था को बनाए रखें। यदि कोई शान्ति भंग करता है या नियमों का उलंघन करता है तो उसे आश्रम से किसी भी वक्त निकाला जा सकता है।

2—आश्रम में रहने वाले हर व्यक्ति को आवश्यक है कि वो रात्री में 2 बजे की आराधना स्नान करके करे। आराधना हर घण्टे पर होती है जिसमें 5 मिनट का समय लगता है, बड़ी 5 आराधनाऐं हैं जिनमें 20 या 30 मिनट का समय लगता है, प्रातः 7 बजे हवन, कीर्तन गुरूदर्शन10 बजे दैनिक पाठ।

3—वर्ष में दो बार साधना काल कल्प के दिनों में 40 दिन के उपवास निर्जल, जल, या फल वाले मौनव्रत सत्य के व्रत सबके लिए जरूरी हैं।

4—सुभा की चाय का समय— 6बजे । भोजन रविवार में सतसंग के पश्चात शाम का भोजन— सूर्यास्त की आराधना के बाद । देर रात में आये यात्री को भोजन अवश्य मिलेगा। भोजन मौन होकर करें, भोजन उतना ही लेवें कि जूठा ना छोड़ना पड़े, सफाई और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें। यहाँ भोजन और आवास का किसी से कोई शुल्क नहीं लिया जाता,शर्त ये है कि व्यक्ति शान्तिप्रिय हो, शान्ति भंग ना करे, और आराधना के साथ साथ दरबार की व्यवस्था को बनाए रखने के लिए सेवा कार्य भी कुछ ना कुछ अवश्य करें ।

5—गुरूदरबार में सर ढक कर जावें। गुरू महाराज अगर एकान्त में हों तो सेवको से भेंट कराने की जिद् ना करें। क्रोध ना करें, प्रतीक्षा करें, गुरूदेव के लिए आप बहुत महत्वपूर्ण तथा अतिप्रिय हैं, इस बात का विश्वास करें तथा सतसंग के बाद ही जावें। गुरूदेव से प्रतिदिन आप प्रातः 8 बजे गुरूदरबार में मिल सकते हैं।

6—सतसंग रविवार में दोपर 1 बजे से 3 बजे तक होता है। उस दिन जूते चप्पल सेवादारों को ही देवें इधर उधर ना निकालें – भेंट राशी या तो गुरूचरणों में या दानपात्र में डालें अन्य किसी के हाथों में ना पकड़ावें ।

7—**दरबार का नाम लेके चोगा पहनके कुछ लोग बाहर संगत में घूमते हैं वे आपको नुकसान भी पहुँचा सकते हैं, उनसे सावधान रहें, उनको चन्दा या धन आदि ना देवें जब आपके यहाँ वे आवें तुरन्त दरबार को फोन करें उनको भेजा गया है या नहीं।**

8—गुरूदरबार में आके इधर उधर की फालतू बातें ना करें, मौन रहें, और सुमरन अधिक से अधिक करें, सेवा भी अवश्य करें, दरबार में सफाई का विशेष ध्यान रखें,

9—जब बाहर कहीं सतसंग होता है तो अपने घर गुरूदेव को लेजाकर प्रार्थना पढ़वाने की जिद् ना करें, उससे व्यवस्था खराब होती है तथा दूसरे सतसंगियों के दिल में ईर्ष्या और दुख होता है कि गुरूदेव वहाँ गये और वहाँ नहीं गये जात पात का भेद ना करें।

10—सतसंगी अपने नये मकानो पर भूत के चित्र ना लगावें, वरन **एक तू सच्चा तेरा नाम सच्चा** ये परमेश्वर का मंत्र लिखवावें जिससे परमेश्वर का प्रकाश होवे ।

11—शादी विवाह जन्मदिन आदि के जो कार्ड छपते हैं उन पर मंत्र अवश्य छपवावें तथा उपहार में दरबार की वीडियो सीडी, ऑडियो कैसेट, या एक वर्ष की पत्रिका मुक्ति का रास्ता की सदस्यता या अन्य साहित्य देवें।

12—कुछ लोग सभी जगह ऐसे होते हैं जो सज्जनों से अनायास ही विरोध रखते हैं, और झूठी अफवाहें आए दिन फैलाते रहते हैं, उन अफवाहों पर आप ध्यान ना देवें और अपने धर्म मार्ग में लगे रहें, यदि आपके मन में कोई शंका हो, कोई बात हो, कुछ पूछना हो, कोई ग्रन्थि हो,कोई परेशानी हो,तो सीधे गुरूदेव से बात करें, मनमुखों की बातों में ना आवें, और दुष्टजनों की झूठी अफवाहों से आहत ना होवें, अपना जीवन और परमार्थ का पवित्र मार्ग नष्ट ना होने देवें, रविवार या दरबार के किसी त्योहार पर किसी भी आराधना के समय में फोन ना करें, फोन प्रातः10 बजे से शाम 5 तक ही करें, गाँव गाँव शहर शहर में माइक से आराधना करें।

13—गुरूदेव सब तरहा से अपने पास आए लोगों का जीजान से ख़याल रखते हैं और अपना दिव्य प्रेम और आशीष सबको देते हैं, दरबार में किसी तरह का जात पात गरीब अमीर ऊँच नीच का कोई भेदभाव नहीं है,

14—यहाँ रहने वाला हर व्यक्ति गुरूदेव के दिव्य परिवार का एक सदस्य है, रहने वालों को चाहिए कि वे पवित्रआत्मा बनें साधना करें अमृत और प्रकाश से स्वयं को भरे रखें, दूसरों की मदद और सेवा के लिए सदा तत्पर रहें, मीठा बोलें प्रसन्न रहें, देवआत्मा बनें, सच्चे साधक बनें सतगुरू व परमेश्वर के प्रिय बनें... ।

हमारे उद्देश्य

गुरूदरबार में वृद्धों के लिये निशुल्क सेवा, आंखों का कैम्प,समय समय पर लगता रहता है !जो दुखी लाचार हैं वे दरबार में हमेशा आकर रह सकते हैं।

1– हमारा उद्देश्य है एक ईश्वर की आराधना के जरिये अपने बिखरे समाज को संगठित करना

2–जातपात को ना मानना, हम देवताओं के पुत्र हैं इस बात का प्रचार करना और अपने नाम के साथ देवपुत्र लिखें। उपेक्षित दुखी बीमार वृद्धों की सेवा करना, उनकी जीवन शक्ति और उत्साह को बढ़ाना, नवयुवकों से हमारा कहना है कि वे अपने वृद्धों की उपेक्षा ना करें ।

3–जो शराब पीने वाले हैं उन्हें हम कहते हैं– शराब ना पियें, बीड़ी ना पियें किसी तरह का नशा ना करें लड़ाई झगड़े और मुकदमों में पड़कर अपना जीवन अपना वक्त और अपना धन बरबाद ना करें।

4–नवयुवकों और उनके अभिभावकों से हमारा कहना है कि– वे दहेज के लोभ में ना पड़ें, और अपने घर में देखें कि हमारे बच्चों में क्या बुराई है उसे दूर करने की कोशिश करें ।

5–अपने जानवरों को कसाई के हाथ में ना देवें,

6–अपने कमजोर पड़ौसी को ना सतावें, कमजोर भाई को ना सतावें, कमजोर पत्नि, कमजोर संतान, कमजोर कर्मचारी, कमजोर ससुराल वालों पे अत्याचार ना करें ।

7–बीमारों कमजोरों और लाचार व्यक्तियों की मदद करने के लिये हर वक्त तैयार रहें ।

8–हमारे राष्ट्र पर अगर कोई संकट आता है तो उसके लिये अपना धन और जीवन कुरबान करने के लिये तैयार रहें, देश के दुश्मनों से डटके मुकाबला करें, उनसे बचने या दुबकने का रास्ता ना खोजें, शेर के सामने और भयानक जहरीले नाग के सामने अगर तुम सीना तान के खड़े हो जाओगे तो तुम उसे मारकर गिरा दोगे, अगर लड़ने से पहले ही घबरा जाओगे तो बिना लड़े ही तुम हार जाओगे, पाप आत्माओं में कुछ बल नहीं होता, और तुम्हारे साथ धर्म आचरण का बल है, परमेश्वर तुम्हारा मददगार है, सो डरो नहीं और आगे बढ़ो तथा जगत में धर्म की रोशनी को आगे ले जाओ।

9–अपने समाज को संगठित करो, सच्चाई और ईमानदारी से धन कमाओ, अपने घर को तपोवन जैसा पवित्र और उच्च संस्कारों से परिपूर्ण बनाओ, रोज पहले स्नान करो, रोज परमेश्वर की आराधना करो, रोज गुरूबचनों का और वेद की दो ऋचाओं का ध्यान पूर्वक पाठ करो, उन्हें समझो, रोज दान का एक हिस्सा निकाल कर रखो, जो राष्ट्र पर यदि कोई संकट आता है तो उस वक्त वह धन काम आवेगा या साध संगत की सेवा में काम आवेगा, जो माँगने वाले बीड़ी शराब पीते हों उन्हें कभी भी दान आदि नहीं देना चाहिये, अन्यथा देने वाला भी उनके पाप करम में शामिल माना जाता है ।

10–गर्भ में ही कन्याओं की हत्या कराना पाप है, ऐसा ना करो, संसार में जो भी जीव आता है उसका इन्तजाम परमेश्वर करता है, ना कि मनुष्य। अपनी जनसंख्या को घटाओ नहीं, बढ़ओ, नहीं तो देश के दुश्मन जनसंख्या के आधार पर हमारे देश को हम से छीन लेंगे, उन्होंने पहले भी ऐसे ही किया था। जात पात के नाम पर आपस में कमजोर ना बनो, मिलकर रहो, संगठित होके रहो ।

11–महीने के पहले रविवार को आप गुरूदरबार में अवश्य आवें, महीने में कम से कम एक रविवार गुरूर्दशन और प्रवचन सुनने का समय अवश्य निश्चित करें, उससे तुम्हें शान्ति और आत्मा में शक्ति प्राप्त होगी, आपसी मेलजोल बढ़ेगा, और तुम्हारी आत्मिक उन्नति के साथ ही सामाजिक उन्नति भी होगी, अपनी रक्षा के लिये खुद ही तैयार रहें, अस्त्र शस्त्र रखें और संकट के समय अपनी और दूसरों की रक्षा करें, ये ना सोचें कि तुम्हें बचाने आसमान से नीले घोड़े पर सवार होके कोई आवेगा, खुद ही समर्थवान बनो, बहादुर बनो, आत्मा से तपसी और शरीर से सैनिक की तरह बनो, तप और वीरता हमें अपने पुरखों से मिली है, उसे आगे तक बढ़ाओ, अपने देश पर सब कुछ न्योछावर करने को तैयार रहो ।

12–मेरे राष्ट्र का हर एक व्यक्ति आत्मा से तपस्वी और शरीर से एक मजबूत सैनिक बने, जो अपने धर्म की अपने राष्ट्र की सेवा कर सके रक्षा कर सके। अपने सत संकल्प और धर्म पर अडिग रहो, आत्मा में कमजोर ना बनो, परमेश्वर हमारे साथ है, उसकी मदद हमारे साथ है ।

सतसंग

शाम की आराधना का समय 5 बजे

भक्तिर अव्यभिचारणी च अनन्येन योग: । परमेश्वर के सिवा जो किसी की पूजा नहीं करता वह अव्यभिचारणी योग है ।उसी से मनुष्य परमात्मा को प्राप्त कर लेता है ।

जनवरी

1. ग्राम जसमौरा निकट मिर्जापुर पो नहटौर जि बिजनौर आयोजक श्री छोटे सिंह,फोन–9568551213

5. बृजमोहन अग्रवाल धर्मशाला, पटपड़ गंज दिल्ली–91,मो–09412493683, 09810628650.

9,10.परमसुन्दर सतसंगभवन किशनपुरा सहारनपुर समय दोपहर 2 बजे आयोजक अशोकशर्मा भावना शर्मा मो 9927202323,9359902824,

16. ग्रा खण्डसाल जुन्नारदार पो हादरपुर जि मुरादाबाद आयोजक मास्टर कृपाल सिंह समय दोपहर 1 बजे मो 9719912849,9458523107,

22. ग्रा बनी पो हरगनपुर जि बिजनौर आयोजक सोमपाल सिंह पुत्र श्री नेतराम सिंह मो 9458515739

29. ग्रा पो लक्खुवाला जि बिजनौर आयोजक श्री सुरेश त्यागी मो 9411229154

30,31. रामलली धरमशाला पुरैना रोड आंवला जि बरेली आयोजक श्री संजीव गुप्ता लाल कोठी वाले समय दोपहर 3 बजे मो 9927130488,9837358105,

अपने गाँव में मुहल्ले में माइक से आराधना करें सुभा 4 बजे और रात्री की अन्तिम 7 बजे की आराधना,और ये ध्यान रखें कि थेड़ी ही देर माइक पर बोलें उस पर सीडी वगैरा ना चलावें कभी पड़ौसियों को तकलीफ पहुँचे । माइक पर आराधना करना महान पुण्य है, ऐसा करके आप दूसरों के दिल को भी ईश्वर की तरफ को प्रेरित करते हैं और सतगुरू व परमेश्वर के प्रियपात्र बनते हैं...! दूसरों को नामदान के लिये प्ररित करें उन्हें परमेश्वर की तरफ लगावें।

फरवरी

1,2. श्री सच्चीदानन्द जनसहयोगी इण्टर कालिज, लहरापुर,जि–ओरैया,समय–दोपहर 2बजे,आयो–ड़ा रामशंकर शर्मा प्रधान,देवेन्द्र सिंह चौहान व गुड्डू सिंह,मो–9719602505,9627476545

5. ग्राम व पो–भटपुरा वाया अफजलगढ़ जि–बिजनौर, आयोजक–श्री रमेशचन्द्र चौहान।

6,7. श्री राम मैरिज होम कोल्ड़ स्टोर निकट राम रतन इण्टर कालिज मिल रोड बिलारी जि–मुरादाबाद, समय–दोपहर 2 बजे से,आयो–समस्त सतसंगीगण, मो–9756498635,8958806112

13,14,15. **15 वाहिनी पी.ए.सी** ताज गंज आगरा समय दोपहर 2बजे,आयोजक–समस्त सतसंगीगण, मो–9412893550,8791294561

18,19,20–शिवरात्री सेवा प्रारम्भ

21,22. एल आई सी ओफिस के पास आवास विकास बदाँयू,समय–दोपहर 2बजे,आयो–श्री संजीव शर्मा, मो–9411421983

26. ग्राम व पो–गजरौला,जि–बिजनौर,आयो–धाता विधाता,मो–9756874309

27.ग्राम–सिरसामोहन,पो–पायतीकला,जि–जे.पी.नगर, आयो–श्री राजपाल सिंह व समस्त सतसंगीगण, समय–दोपहर 1बजे से,मो–9012710669,8899716913

पत्रिका के सदस्य अपना वार्षिक सदस्यता शुल्क 180 रु. जमा कराने की कृपा करें व नये सदस्य भी बनावें जिनके यहाँ पत्रिका किसी कारण से नहीं पहुँच पा रही हैं वे दरबार में सूचित करें जिससे उनको पत्रिका भेजी जा सके ...।

कृपया मातायें सतसंग में जेवर गहने पहन कर ना आया करें कभी वे खो जायें या चोरी हो जावें। गुरूदरबार में या कहीं भी सतसंग में जावें तो सफेद कपड़े सफेद दस्तार और अपनी माला लेके जावें मत्था टेकते वक्त हाय तौबा ना करें उस वक्त बाते ना करें चुप रहें मौन रहें उस समय आपको देखने से पता चलता है कि आप सभ्य हैं या असभ्य ?

गुरूमहाराज से जगहा जगहा प्रार्थना पढ़ने का आग्रह ना करें।

मेरे हमनशीं

जो भी गुज़रे है गलियों से मेरी वो तेरे जैसा लगता है ।
मेरे हमनशीं मुझको ये बता, मुझको ऐसा क्यों लगता है ।।

तू सामने होता है मेरे तो मैं खोया खोया फिरता हूँ ।
तेरे पीछे अपना चेहरा भी मुझे तेरे जैसा लगता है ।।

तेरी आँखों में पढ़ी मैने दोनो जहान की दास्तां ।
तेरी आँखों में जाने क्यों मुझे उस रब का घर लगता है ।।

तू मेरे करीब होता है तो गुलिस्तानों से गुज़रता हूँ ।
जाने क्यों तेरी जुदाई में पतझड़ पतझड़ सा लगता है ।।

कभी तू अपना सा लगता है कभी लगता है बेगाना सा ।
तेरी बाते हैं उस रब की बातें तेरा प्यार फ़रिश्तों सा लगता है ।।

तेरी चाहत में जानेजहां मैने दुनियां को भुला दिया ।
जब तेरी याद आती है हर चेहरा चाँद सा लगता है ।।

हाथों में इश्क का जाम है और जिन्दगी की शाम है ।
तेरे संग सितारों में उड़ता हूँ मुझको कभी ऐसा लगता है ।।

अपनी आँखों में चराग़ लिये मेरे ख़्वाब ढूंडते हैं तुझे ।
तेरा नाम लब पे आते ही फूलों का मौसम लगता है ।।

तुझको देखा तो ऐसा लगा के जैसे चाँद निकल आया ।
तुझे देखके रब की पूजा करूँ मुझको अब ऐसा लगता है ।।

मेरी खिड़की पे आके एक पंछी तारीफें तेरी करता है ।
मेरा इशक भी पंछी बनके तेरी गलियों में उड़ता फिरता है ।।

फुलसन्दे वाले बाबा तुम मदहोश से क्यों रहते हो ।
साकी ने नूर पिलाया है हमको कुछ ऐसा लगता है ।।

कुछ बिगड़े हुए सतसंगी जो अब गुरूदरबार में नहीं रहते वे सतसंगियों के घर जाके झूठे बहाने बनाके झूठ बोलके उनसे मोटी रकम ठग लेते हैं ऐसे कई वाकये सामने आये हैं इस लिये आप सतसंगियों को गुरूदेव की तरफ से सूचित किया जाता है ऐसे घटिया लोगों से वास्ता ना रखें और ना उनको धन देवें तुरन्त फोन करके गुरूदरबार को सूचना देवें।